RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2018-20/पृष्ठ संख्या 44/प्रकाशन तिथि 26 मई 2020/ पोस्टिंग तिथि 29 मई

बाल विज्ञान पत्रिका, जून 2020

चकमक

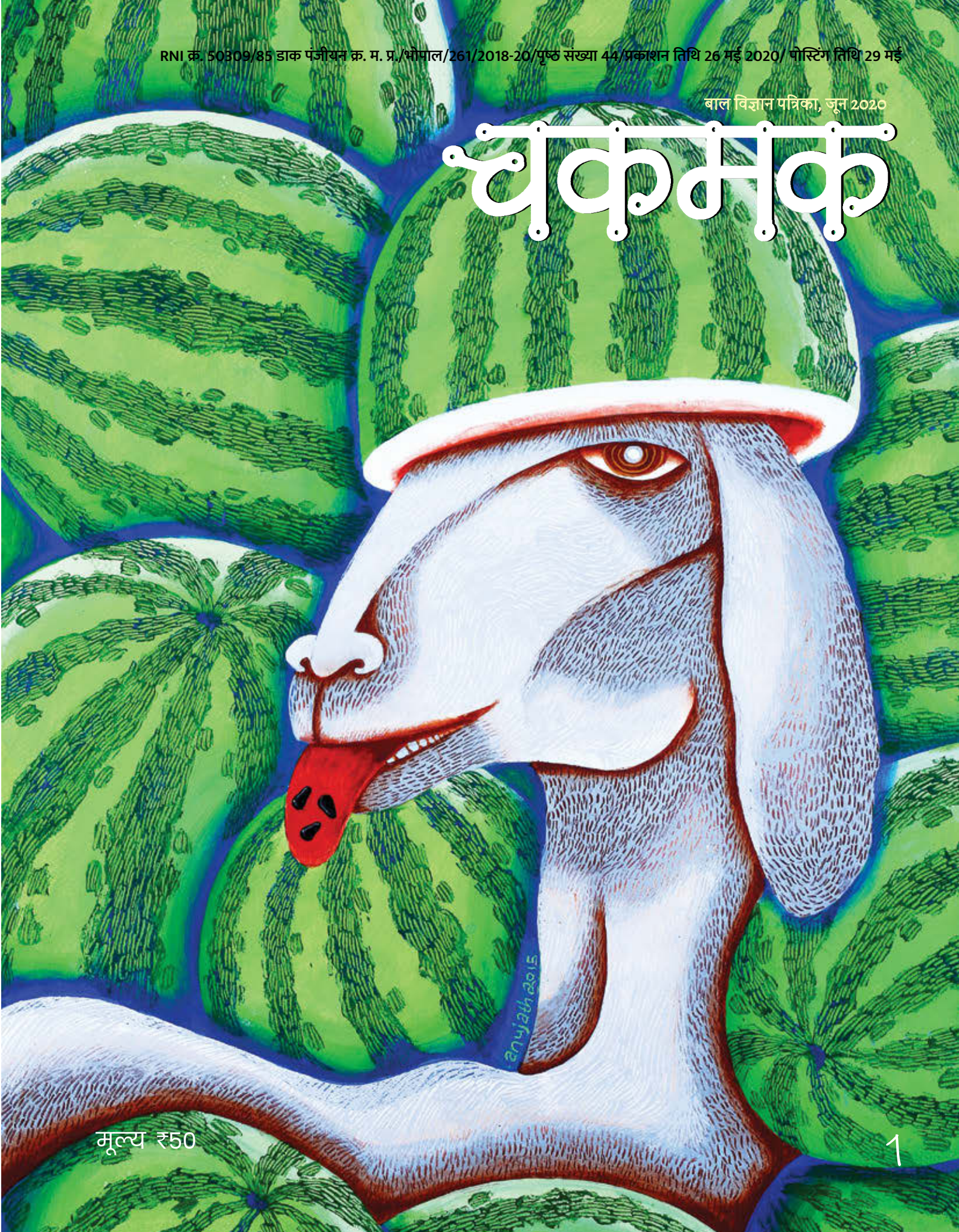

मूल्य ₹50

तरबूज़ बड़ा-सा

रावेन्द्रकुमार रवि

काले-काले
आसमान में,
जब सफेद तारे मुस्काए
उन्हें देखकर
मैंने सोचा,
काश, अगर ऐसा हो जाए...

लाल रंग
हो जाए काला,
फिर सफेद काला हो जाए
आधा कट
तरबूज़ बड़ा-सा,
मेरे मुँह में रस टपकाए

तुम भी बनाओ

तरबूज़ आइसक्रीम

जुगाड़:
दो कप तरबूज़ के कटे हुए टुकड़े, शक्कर या शहद स्वादानुसार, दो चम्मच नींबू का रस और आइसक्रीम का साँचा।

- कटे हुए तरबूज़ों से बीज अलग कर लो।
- एक भगोने में तरबूज़ लो और हाथ से मसलकर लुगदी बना लो।
- छन्नी से जूस को अच्छे-से छान लो।
- शक्कर या शहद और नींबू का रस मिला लो।
- अब इस जूस को आइसक्रीम के साँचे में डालकर 6-7 घण्टे के लिए फ्रीज़र में रख दो। साँचा नहीं हो तो किसी कप में भी इसे जमा सकते हो।

लो बन गई तुम्हारी आइसक्रीम।

अंक 405 • जून 2020

चकमक

इस बार

तरबूज़ बड़ा-सा - रावेन्द्रकुमार रवि - 2
तुम भी बनाओ - तरबूज़ आइसक्रीम - 2
मेरी माँ और पड़ोसी माँएँ - सजिता नायर - 4
ऐसा क्यों लगता है कि यह पहले भी हो चुका है? - 6
असली अनिल कपूर - मुदित श्रीवास्तव - 7
एक नदी के मुहाने पर - सी एन सुब्रह्मण्यम् -II
भूलभुलैया - 13
बच्चा रसोईघर - निघत - 14
गर्मी के दिन - प्रतीक तिवारी - 17
जिस दिन मैं बनी... - विनता विश्वनाथन - 18
हामोन्शु - इशिता देबनाथ बिस्वास - 21

जामुन - रामकरन - 24
तुम भी जानो - 25
सोहम भी जलपरी - हर्षवर्धन कुमार - 26
मंजूर - गीता धुर्वे - 27
बोरेवाला - जयश्री कलाथिल - 30
मेरा पन्ना - 34
माथापच्ची - 38
चित्रपहेली - 40
भारतीय वन्यजीव वीडियो कॉन्फरेंस - रोहन चक्रवर्ती - 43
बुढ़िया के बाल - मेराज रज़ा - 44

सम्पादन
विनता विश्वनाथन

सह सम्पादक
कविता तिवारी
सजिता नायर
कनक शशि

विज्ञान सलाहकार
सुशील जोशी

डिज़ाइन
कनक शशि

सलाहकार
सी एन सुब्रह्मण्यम्
शशि सबलोक

सहयोग
अभिषेक दूबे

वितरण
झनक राम साहू

एक प्रति : ₹ 50
वार्षिक : ₹ 500
तीन साल : ₹ 1350
आजीवन : ₹ 6000
सभी डाक खर्च हम देंगे

चन्दा (एकलव्य के नाम से बने) मनीऑर्डर/चेक से भेज सकते हैं।
एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण:
बैंक का नाम व पता - स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, महावीर नगर, भोपाल
खाता नम्बर - 10107770248
IFSC कोड - SBIN0003867
कृपया खाते में राशि डालने के बाद इसकी पूरी जानकारी accounts.pitara@eklavya.in पर ज़रूर दें।

एकलव्य
एकलव्य फाउंडेशन, जाटखेड़ी, फॉर्च्यून कस्तूरी के पास, भोपाल, मध्य प्रदेश 462 026
फोन: +91 755 2977770 से 3 तक; ईमेल: chakmak@eklavya.in, circulation@eklavya.in
वेबसाइट: https://www.eklavya.in/magazine-activity/chakmak-magazine

आवरण चित्र: अनुजात सिन्धु विनयलाल, नौवीं, त्रिशूर, केरल

मेरी माँ और पड़ोसी माँएँ

सजिता नायर

मुलाकात चित्रकार अनुजात के साथ

अनुजात ने ग्यारह साल की उम्र में एक ऐसी पेंटिंग बनाई जिसके लिए वह अब दुनिया भर में पहचाना जा रहा है। पेंटिंग थी — 'माइ मदर एण्ड द मदर्स इन द नेबरहुड'।

पन्द्रह साल का अनुजात अभी दसवीं में पढ़ता है। जब वह एलकेजी में था तभी उसने पेंटिंग की दुनिया में कदम रख दिया था। खुद से ड्राइंग करते-करते वह सीखता गया। उसने किसी मास्टर से शिक्षा नहीं ली। उसके मम्मी-पापा को उस पर बहुत भरोसा था और यही उसकी सबसे बड़ी ताकत थी। महज़ नौ-दस साल की उम्र से ही वह अपनी कला के लिए पहचाना जाने लगा।

अनुजात के लिए सबसे खास पल वो था जब माँओं पर उसकी बनाई एक पेंटिंग को केरल सरकार ने अपने 2020-2021 के जेंडर बजट डॉक्यूमेंट का आवरण चित्र बनाया। अनुजात के साथ फोन पर हुई मेरी बातचीत का कुछ हिस्सा तुम यहाँ पढ़ सकते हो...

अपनी बनाई हुई पेंटिंग्स में से तुम्हारी सबसे पसन्दीदा पेंटिंग कौन-सी है?

मैंने बकरियों की पेंटिंग की एक सीरीज़ बनाई थी – 'माइ गोट्स एण्ड देयर लाइफ'। मुझे वो बहुत पसन्द है और उसमें से सबसे ज़्यादा पसन्द तरबूज़ों के साथ बकरी का चित्र है। कारण है चित्र में उभरते हुए रंग।

इस सीरीज़ को बनाने का खयाल तुम्हें कैसे आया?

मैंने सबसे पहले एक प्रदर्शनी (एक्ज़िबिशन) के लिए बकरी की एक पेंटिंग बनाई थी। उसके बाद हमें लगा कि क्यों न इसकी एक सीरीज़ बनाई जाए। बस फिर वहीं से मैंने ऐसी कई और पेंटिंग बनानी शुरू कीं।

माँओं को लेकर तुमने जो पेंटिंग बनाई है उसके बारे में कुछ बताओ।

हम हमेशा अपने आसपास अपनी माँओं को देखते हैं – काम करते हुए और कई परेशानियाँ झेलते हुए। कपड़े धोते हुए, खाना बनाते हुए। मैंने भी अपने आसपास हमेशा यही देखा और इसे पेंटिंग में उतार दिया। हम इन चीज़ों को अपने आसपास होते हुए देखते तो हैं, फिर भी अनदेखा कर देते हैं।

तुम्हारे पसन्दीदा चित्रकार कौन हैं और उनका काम तुम्हें क्यों पसन्द है?

मुझे माइकल एंजलो और दा विन्ची की पेंटिंग पसन्द हैं। उनकी पेंटिंग का स्टाइल मुझे पसन्द है और जब भी मैं उनकी पेंटिंग देखता हूँ तो मुझे प्रेरणा मिलती है।

अनुजात का मानना है कि हम जो भी अपनी आँखों से देखते हैं उसका हमें चित्र बनाना चाहिए। हमारे आसपास क्या हो रहा है उसको अपने चित्रों में उतारना चाहिए। काम्पिटिशन या मार्केट वर्क को दिमाग से हटाकर सिर्फ जो दिख रहा है उसे बनाना चाहिए।

जब अनुजात पेंटिंग नहीं कर रहा होता है तो फुटबॉल और वीडियो गेम्स खेलना बेहद पसन्द करता है।

indane
Anujath 2017

ऐसा क्यों लगता है कि यह पहले हो चुका है?

क्या तुमको कभी ऐसा लगा है कि जो दृश्य तुम अभी देख रहे हो वह पहले भी देख चुके हो या जो घटना अभी तुम्हारे साथ घट रही है हूबहू वही घटना तुम्हारे साथ पहले भी घट चुकी है? इस आभास को *देजा व्यू* कहते हैं। *देजा व्यू* फ्रेंच शब्द हैं जिनका मतलब है 'पहले देखा गया'। सवाल यह है कि *देजा व्यू* का एहसास होता क्यों है?

आम तौर पर इस एहसास को रहस्यमयी और असामान्य माना जाता है। अलबत्ता, इसे समझने के लिए वैज्ञानिकों ने कई अध्ययन किए हैं। प्रयोग के लिए सम्मोहन (हिप्नोसिस) और आभासी यथार्थ (वर्चुअल रिऐलिटी) के इस्तेमाल से ऐसी स्थितियाँ उत्पन्न की गई हैं जिनमें *देजा व्यू* का एहसास हो।

इन प्रयोगों से वैज्ञानिकों का अनुमान था कि *देजा व्यू* एक स्मृति आधारित घटना है। यानी *देजा व्यू* में हम एक ऐसी स्थिति का सामना करते हैं जो हमारी किसी वास्तविक स्मृति के समान होती है। लेकिन उस स्मृति को हम पूरी तरह याद नहीं कर पाते हैं तो हमारा मस्तिष्क हमारे वर्तमान और अतीत के अनुभवों के बीच समानता पहचानता है। और हमें एहसास होता है हम इस स्थिति से परिचित हैं।

कुछ अन्य प्रयास भी हुए हैं यह बात समझाने के लिए कि हमारी स्मृति ऐसा व्यवहार क्यों करती हैं। कुछ लोग कहते हैं कि यह हमारे मस्तिष्क के कनेक्शन में घालमेल का नतीजा है जो लघुकालीन स्मृति (शॉर्ट टर्म मेमोरी) और दीर्घकालीन स्मृति (लॉन्ग टर्म मेमोरी) के बीच गड़बड़ पैदा कर देता है। यानी कि पुरानी यादों और हाल ही में हुई घटनाओं की यादों में गड़बड़। इस कारण बनने वाली नई स्मृति लघुकालीन स्मृति में बने रहने की बजाय सीधे दीर्घकालीन समृति में चली जाती है। जबकि कुछ लोगों का कहना है कि हमारा मस्तिष्क किसी स्मृति के नदारद होने पर भी कभी-कभी इसके होने के संकेत देता है।

एक अन्य सिद्धान्त के अनुसार *देजा व्यू* झूठी यादों से जुड़ा मामला है, ऐसी यादें जो वास्तविक महसूस होती हैं लेकिन होती नहीं। ठीक सपने और वास्तविक घटना की तरह।

एक अन्य अध्ययन में लोगों को *देजा व्यू* का एहसास कराया गया और उस समय उनके मस्तिष्क को MRI की मदद से स्कैन किया गया। इस अध्ययन में दिलचस्प बात यह पता चली कि *देजा व्यू* के वक्त मस्तिष्क का स्मृति के लिए ज़िम्मेदार हिस्सा सक्रिय नहीं था बल्कि मस्तिष्क का निर्णय लेने वाला हिस्सा सक्रिय था। वैज्ञानिक अब तक *देजा व्यू* को स्मृति से जोड़कर देख रहे थे।

हमें अभी भी पता नहीं कि *देजा व्यू* का क्या फायदा हो सकता है। लेकिन हमें इतना तो पता है कि यह शायद सभी लोगों को नहीं होता। कुछ लोगों का मानना है कि ऐसे लोगों के मस्तिष्क शायद ज़्यादा सशक्त हैं।

स्रोत फीचर्स से साभार

असली अनिल कपूर

मुदित श्रीवास्तव
चित्र: शुभम लखेरा

जिसे देखो वो आज काम पर लगा हुआ था। वैसे तो रोज़ ही स्कूल की साफ-सफाई सब मिलकर किया करते थे पर आज सबके हाथों में एक अलग ही तेज़ी थी और चेहरों पर चमक भी। सबसे पहले महेश स्कूल आया। चार दोस्तों की चाण्डाल चौकड़ी में महेश ही था जो समय का बड़ा पाबन्द था। फौजी बनना चाहता था। सबसे पहले उसी ने गौर किया कि टीचर्स और बच्चे बड़ी ही लगन के साथ लगे हुए हैं। थोड़ी देर में आनन्द और लखन भी आ गए। वो भी यह सब देखकर हैरान थे। दोनों ने आँखों ही आँखों में महेश से पूछा, "भैया जो का चल रओ?"

महेश ने कन्धे उचकाकर आँखों ही आँखों में जवाब दिया, "मुझे का पतो?"

चौकड़ी के तीन मेम्बर तो साथ थे और तीनों को ही लगा था कि मिस्टर इंडिया यानी कि चौकड़ी के चौथे मेम्बर को तो पता ही होगा कि आखिर ये हो क्या रहा है। दरअसल ग्रुप में वह एक ऐसा बन्दा था जिसे हर बात की खबर होती थी। वो मियाँ पता नहीं कहाँ से खबर जुगाड़ के लाते थे और खबर पुख्ता भी होती थी। ऐसा नहीं था कि मियाँ फेंक रहे होते थे। इसलिए तीनों इस चौथे मेम्बर का इन्तज़ार बेसब्री से करने लगे। प्रार्थना की घण्टी बजी और सब लोग काम छोड़कर लाइन में लग गए। इतने में ही मिस्टर इंडिया आया और लाइन में महेश के पीछे लग गया। महेश के आगे लखन और पीछे आनन्द लगा हुआ था। अब चाण्डाल चौकड़ी पूरी हो चुकी थी। मिस्टर इंडिया ने धीरे-से महेश के कान में फुसफुसाकर कहा, "अनिल कपूर।" महेश के होश उड़ गए। वो बोला, "क्या? अनिल कपूर?" मिस्टर इंडिया बोला, "अबे अनिल कपूर आ रओ है। अपने गाँव में शूटिंग है..."

दरअसल लक्की, टिल्लू, तोपसिंह और सलीम ये चारों अनिल कपूर के दीवाने थे। बात कुछ यूँ थी कि ये चौकड़ी जिस गाँव में रहती थी वहाँ ना तो बिजली सही से हुआ करती थी और ना ही हर घर में टीवी था। लेकिन गाँव के लोग सिनेमा के दीवाने थे। सिनेमा देखने शहर जाया करते और फिर लौटकर हफ्तों तक उस सिनेमा की बातें बाकी गाँववालों को सुनाया करते। जैसे कि फलाँ फिल्म में हीरो ने ऐसे कपड़े पहने थे और फलाँ फिल्म में विलेन की हेयर स्टाइल वैसी थी। लेकिन एक बार पटेल सुरजन सिंह गाँव में वीसीआर नाम की बला लेकर आए। तो अब हफ्ते में एक बार, ज़्यादातर शनिवार को इस वीसीआर पर फिल्में देखी जातीं। गाँव के बीचोंबीच चौपाल पर जैसे-तैसे बिजली के तारों की ऐंठा-मुर्री करके टीवी को सेट किया

जाता। शहर से कैसिट किराए पर लाई जातीं और फिर शुरू होता सिनेमा। रात भर यह महफिल जमी रहती। बच्चे-बूढ़े, सास-बहू, बाप-बेटा, मालिक-नौकर, गाय-बछड़े सब साथ मिलकर सिनेमा देखते।

एक दिन सुरजन भैया अनिल कपूर की चार फिल्में ले आए – *तेज़ाब, त्रिमूर्ती, राम लखन और मिस्टर इंडिया*। अपनी चाण्डाल चौकड़ी भी सिनेमा की दीवानी थी। एक ही रात में अनिल कपूर की चार फिल्में देखकर ये चारों अनिल कपूर के जबरा फैन हो चुके थे। अब इन लोगों ने किरदारों के हिसाब से अपने-अपने नाम बदल लिए। चूँकि लक्की को फौज में जाने का बड़ा मन था तो *तेज़ाब* देखने के बाद उसने अपना नाम महेश रख लिया। टिल्लू तिकड़मबाज़ी में माहिर था और गाँव के राशनवाले की लड़की उसे पसन्द थी तो वो बन गया लखन। ऐसे ही *त्रिमूर्ती* का आनन्द, तोपसिंह बन गया और इन तीनों ने मिलकर सलीम को मिस्टर इंडिया बना दिया क्योंकि वह ज़्यादातर गायब ही रहता था और पता नहीं कहाँ से खबरें ले आता था। मानो वह मिस्टर इंडिया की तरह गायब होकर सारी खबरें सुन लेता हो।

तो मिस्टर इंडिया ने बताया कि अनिल कपूर, बोले तो अपना अनिल कपूर अपने गाँव आने वाला है। और शूटिंग भी अपने स्कूल के सामने वाले मैदान में ही होगी। इसीलिए इतनी साफ-सफाई चल रही है। मैदान में जो हनुमानजी का छोटा-सा मन्दिर है उसके सामने दंगल के लिए मैदान बनाया जाना है। शूटिंग में दंगल की फाइट का सीन फिल्माया जाना है। बाकी तीनों को इस खबर पर विश्वास ही नहीं हो रहा था। तभी प्रार्थना खतम होने के बाद प्रिंसिपल सर ने इस बात को और विस्तार से बताया कि अगले 15-20 दिनों में

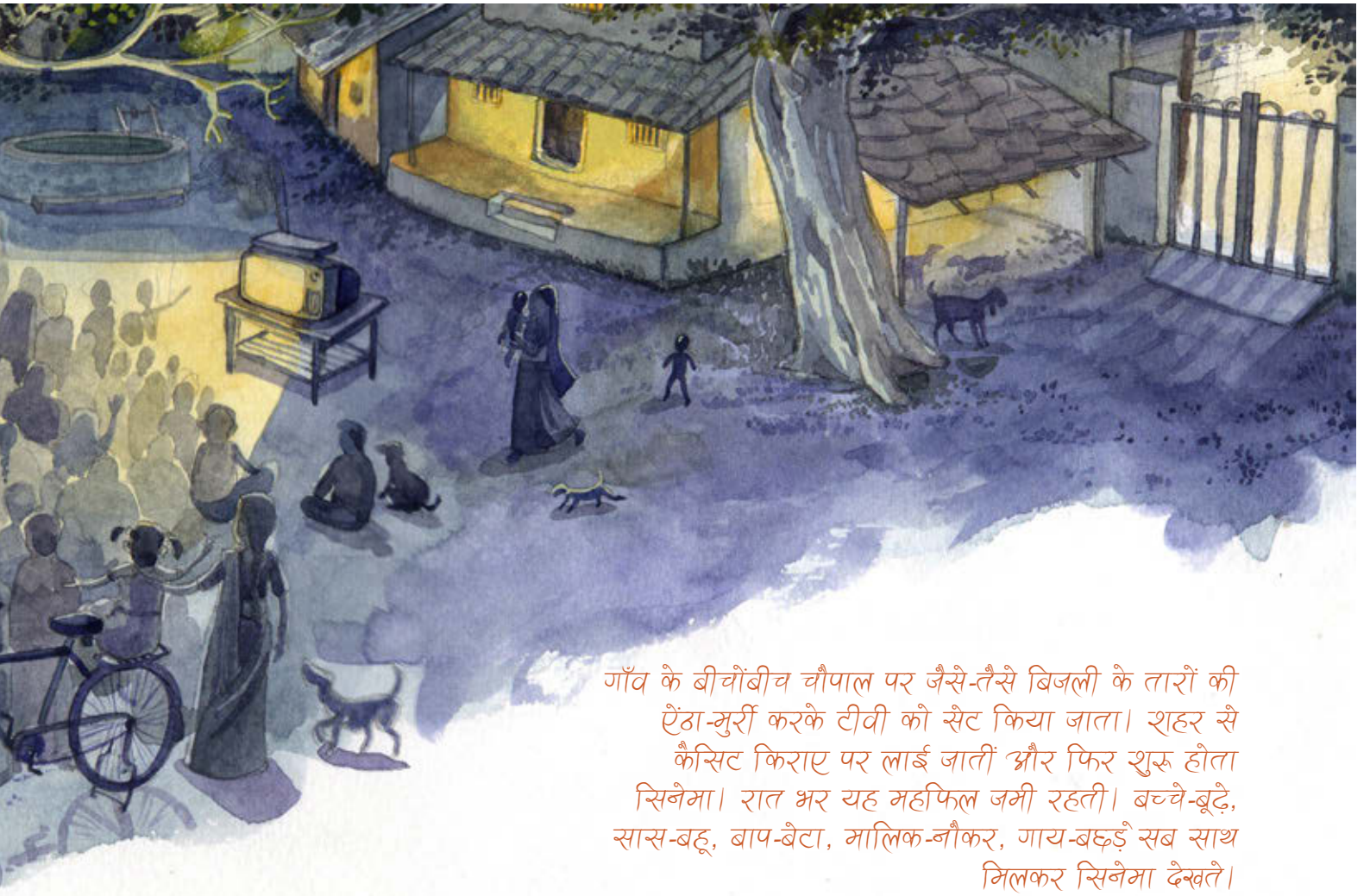

गाँव के बीचोंबीच चौपाल पर जैसे-तैसे बिजली के तारों की ऐंठा-मुर्री करके टीवी को सेट किया जाता। शहर से कैसिट किराए पर लाई जातीं और फिर शुरू होता सिनेमा। रात भर यह महफिल जमी रहती। बच्चे-बूढ़े, सास-बहू, बाप-बेटा, मालिक-नौकर, गाय-बछड़े सब साथ मिलकर सिनेमा देखते।

हमारे स्कूल के मैदान में एक फिल्म की शूटिंग होनी है। इसलिए कक्षाएँ अलग समय पर लगेंगी और हो सकता है कि न भी लगें। चारों की बाँछें तो तब खिल गईं जब उन्होंने यह सुना कि आप लोगों को भी फिल्म में शामिल किया जा सकता है तो अच्छे-से तैयार होकर स्कूल आया करें।

लेकिन उनकी बातों में कहीं भी अनिल कपूर का ज़िक्र नहीं था...

चारों को रात भर नींद नहीं आई।

अगले दिन सुबह से ही गाँव में बहुत चहल-पहल थी। स्कूल के मैदान में भीड़ जमा थी। दो-चार बसें, एक-दो जीपें, बड़े-बड़े कुछ सामान, कैमरा, ट्रॉली और भी पता नहीं क्या-क्या तो मौजूद था वहाँ पर। एक गोल टोपी वाला आदमी माइक लिए बार-बार कह रहा था, "हमें आप सभी का सहयोग चाहिए। प्लीज़ आप सब लोग शान्ति से शूटिंग देखें। यहाँ पर एक दंगल का सीन तैयार किया जा रहा है। बिना आप लोगों के सहयोग के हम ये नहीं शूट कर पाएँगे..."

थोड़ी ही देर में एक गाड़ी आई। उसमें से एक बन्दा बाहर निकला जिसके लिए एक छतरी तुरन्त आ गई क्योंकि धूप थी। गाड़ी से उतरते ही उसने यहाँ-वहाँ देखा और "इट्स टू हॉट हियर" ऐसा कुछ बोला। वो बन्दा कौन था, पता नहीं। लेकिन वो अनिल कपूर नहीं था यह अपनी चौकड़ी को पता चल चुका था। अरे! अपनी चौकड़ी अनिल कपूर की इतनी दीवानी थी कि उसकी शक्ल देखे बिना उसकी चाल-ढाल और आवाज़ से ही पहचान ले कि वो अनिल कपूर है या नहीं।

शूटिंग चल रही थी। टेक पर टेक हो रहे थे। दंगल-दंगल खेला जा रहा था। लाइट्स थीं, कैमरा था,

मिस्टर इंडिया ने धीरे-से महेश के कान में फुसफुसाकर कहा, "अनिल कपूर।" महेश के होश उड़ गए। वो बोला, "क्या? अनिल कपूर?" मिस्टर इंडिया बोला, "अबे अनिल कपूर आ रओ है। अपने गाँव में शूटिंग है..."

बाकायदा एक्शन हो रहा था। लेकिन इन सब में अनिल कपूर कहीं नहीं था। अब अपनी चौकड़ी इस शूटिंग से निराश हो रही थी। चारों का दिल टूटा लेकिन शोर इतना था कि आवाज़ बाहर निकली ही नहीं।

जब डायलॉग बोले जाने लगे तो समझ में आया कि फिल्म भोजपुरी है। चार-पाँच दिन तक यही होता रहा। रोज़ अपनी चौकड़ी शूटिंग की लोकेशन पर टाइम से पहले पहुँच जाती और गाड़ियों से उतरते हुए लोगों में अनिल कपूर को तलाशती और निराश होती। मिस्टर इंडिया एक दिन फिर एक खबर लेकर आया कि इस फिल्म में अनिल कपूर हीरो नहीं है। वह हीरो के बड़े भाई का किरदार निभा रहा है। इसलिए वह शहर में किसी होटल में ही रुका है। चौकड़ी को अब यहाँ ज़रा भी मज़ा नहीं आ रहा था। तभी एक और वैन वहाँ पर आई और उसमें से बड़ी-सी हैट लगाए एक आदमी बाहर निकला। निकलते ही बोला, "ए बिड़ू एक कड़क चाय लेके आना। अदरक जास्ती माँगता, हाँ?"

उसके लम्बे, घने बाल उसकी टोपी से बाहर झाँक रहे थे। दाढ़ी भी थी। उसके आते ही शूटिंग रुक गई। सब उसकी तरफ भागे। दंगल रुक गया। शोर भी बन्द हो गया। उसने टोपी उतारी और हवाएँ चलने लगीं। उसके लम्बे बाल स्लो मोशन में लहराने लगे। उसने ढीली शर्ट पहनी थी और गले में एक लम्बा-सा लॉकेट था। अपनी चौकड़ी का मुँह खुला का खुला था। "क्या यही है अनिल कपूर? ऐसे ही दिखता है?" तोपसिंह बोला। तभी लक्की ने कहा, "अबे जेई है बे, अपना हीरो। यार, कितना गोरा है और लम्बा भी!" टिल्लू बोला, "यार, जो तो फिलिम में एकदम एसई दिखत है, डिट्टो।" तीनों ने मिस्टर इंडिया की ओर रुख करके देखा...

लेकिन मिस्टर इंडिया चुप था और मुस्करा रहा था। उसको पता था लेकिन उसने उन तीनों को नहीं बताया कि वो असली अनिल कपूर नहीं, उसका डुप्लीकेट था।

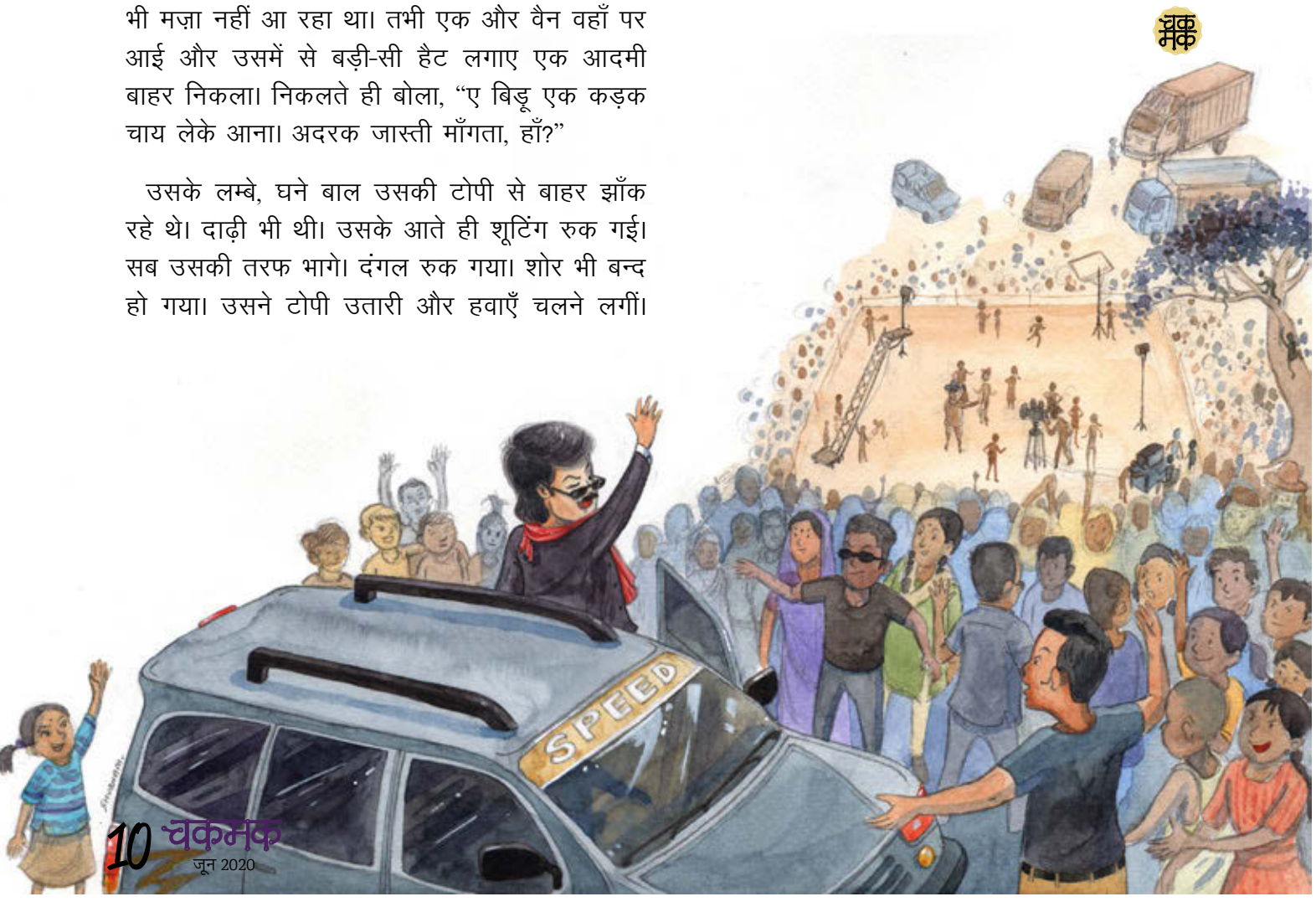

कुछ महीनों पहले मैं और मेरे कुछ दोस्त कावेरी नदी के मुहाने की यात्रा करने निकले। यह नदी शुरू होती है कर्नाटक के कोडगु ज़िले की ब्रह्मगिरी पहाड़ियों से और बहते-बहते तमिलनाडु के समुद्र तट पर पहुँचती है। वहाँ यह एक विशाल डेल्टा बनाकर समुद्र में जा मिलती है। डेल्टा – यानी नदी का वह हिस्सा जहाँ इसका बहाव बहुत धीमा हो जाता है और यह कई शाखाओं में बँटकर बहने लगती है। अन्त में नदी कुछ मामूली नालों के रूप में समुद्र से जा मिलती है।

भूगोल की किताबों में ये सब बातें पढ़-पढ़कर मुझे यही लगता था कि डेल्टा नदी, ज़मीन और सागर के बीच एक प्राकृतिक खेल है। कावेरी नदी के डेल्टा पर जाकर और कई दिनों तक नदी के साथ चलकर मुझे समझ आया कि यह डेल्टा दरअसल प्राकृतिक नहीं हैं। चप्पे-चप्पे पर सरकार का नियंत्रण है और सरकार की अनुमति के बगैर एक बूँद भी इधर से उधर नहीं जा सकती है। अजीब बात है ना! नदी और सागर का मिलना हमें उतना ही स्वाभाविक लगता है जितना कि बादलों का बरसना। मगर नदी के डेल्टा के मामले में बात कुछ और ही है।

एक नदी के मुहाने पर..

शहीद होती मछलियाँ

सी एन सुब्रह्मण्यम्

सर आर्थर कॉटन की मूर्ति जो डेल्टा की शुरुआत में लगी हुई है।

नदी पर नियंत्रण इस तरह से होता है...

जहाँ से डेल्टा शुरू होता है उससे कुछ सैकड़ों किलोमीटर ऊपर सरकार ने बाँध बना रखा है। तो नदी में कितना पानी कब आएगा, यह सरकारी अधिकारी तय करते हैं। पानी डेल्टा के सिरे पर जहाँ पहुँचता है वहाँ रेगुलेटर बने होते हैं यह तय करने के लिए कि किस नदी में कितना पानी छोड़ा जाए। इस सिरे पर दो ही शाखाएँ थीं – कावेरी और कोल्लिडम। दोनों पर रेगुलेटर बने हैं, अँग्रेज़ों के समय के। मगर यह क्या? कोल्लिडम नदी पर बने रेगुलेटर-बाँध का एक हिस्सा तो टूटा हुआ था। एकाध साल पहले वह बारिश के पानी के साथ बह गया था। और अब वहाँ पानी को रोकने के लिए एक अस्थाई भराई की गई थी।

सिंचाई विशेषज्ञों की चेतावनी को नज़रअन्दाज़ करके सरकार ने इसके पास के ही नदी तट से रेत खनन की अनुमति दी थी। इतनी रेत ट्रकों में भर-भरकर ले जाई गई कि अगली बारिश में पानी बाँध को ही बहाकर ले गया।

हम पहले कावेरी नदी पर बने रेगुलेटर को पार करके ज़मीन के टुकड़े पर पहुँचे, और फिर एक बार कोल्लिडम नदी पार करके उसके दूसरे किनारे पर पहुँचे। हमारे साथ एक इतिहासकार थे। उन्होंने हमें बताया कि पास में ही एक जगह से हज़ार साल पुरानी एक नहर शुरू होती है। नदी के

टूटा हुआ बाँध और अस्थाई व्यवस्था

किनारे पत्थर का नाला बना है जिससे पानी को दूर तक ले जाकर खेतों की सिंचाई की जाती है। नहर में एकदम तेज़ी-से पानी बह रहा था और बच्चे उसमें कूद-कूदकर तैर रहे थे। बाकी लोग नहा रहे थे।

वहाँ से हम चले कोल्लिडम नदी के साथ-साथ अगली कड़ी तक। इस जगह को कल्लणै (यानी पत्थर का बाँध) कहते हैं। यहाँ कोल्लिडम और कावेरी इतने पास आ जाती हैं कि दोनों के फिर से मिल जाने का खतरा पैदा हो जाता है। इसे रोकने के लिए सैकड़ों साल पहले, दोनों नदियों के बीच न जाने किसने यहाँ पत्थर का बाँध बनाया था। यहाँ से कुछ आगे जाकर कावेरी नदी दो और शाखाओं में बँट जाती थी। अँग्रेज़ इंजीनियरों ने तय किया कि यह शाखाओं में बँटना कल्लणै में ही हो तो अच्छा है। उन्होंने इसे और विस्तृत किया। कई बदलाव किए। इस तरह अब यहाँ से तीन नदियाँ बहने लगीं – कावेरी, वेण्णार और कोल्लिडम। फिर अँग्रेज़ों ने यहाँ से एक विशाल नहर बनाई, नहर क्या समझ लो एक नई नदी ही बना डाली। इस नहर को पुत्तार या नई नदी कहते हैं। यह सूखे इलाकों से बहती हुई, वहाँ के खेतों को सींचती जाती है।

मछलियों पर नियंत्रण कैसे हो?

खैर मैं तो मछलियों की बात करने चला था। और मछलियाँ क्या जाने सरकार क्या है, उसकी ताकत क्या है। हम झुककर पानी को देख रहे थे। पानी बाँध-रेगुलेटर से छूटकर बहुत तेज़ बहाव के साथ निकल रहा था,

एक हज़ार साल पुरानी नहर यहाँ से शुरू होती है।

बाँध-रेगुलेटर और उनसे निकलने वाली शाखाएँ (एक मॉडल)

कल्लणै बाँध

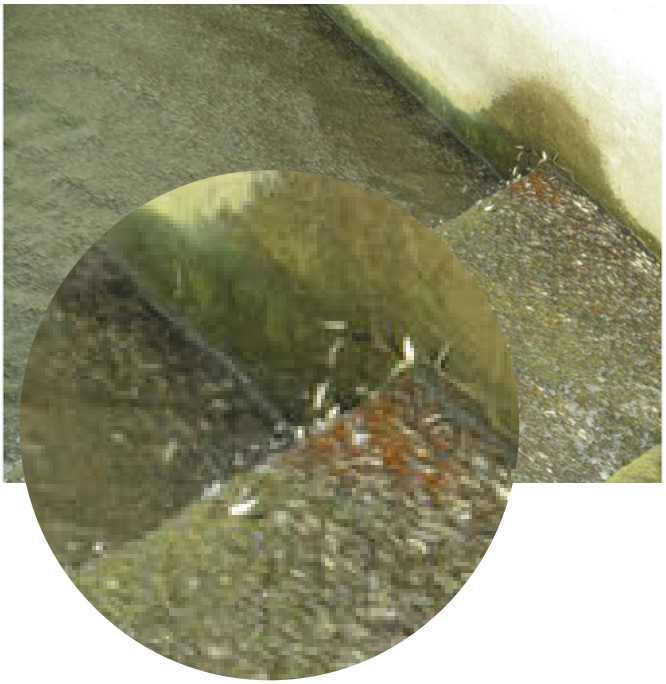

प्रजनन यात्रा पर जातीं सैल्मोस्टोमा, लैबियो और सिर्हाइनस जाति की मछलियाँ

इतना तेज़ कि चट्टान को भी बहाकर ले जाए। वहीं हमने देखा कि लाखों छोटी मछलियाँ बहाव के विपरीत बाँध की सीढ़ियों पर कूदे जा रही थीं। पानी के बहाव के साथ नीचे बह रही थीं। तैरकर फिर बाँध पर चढ़ने की कोशिश में छलाँग मार रही थीं। इस कोशिश में हज़ारों मछलियाँ मरकर एक तरफ पड़ी थीं, तो हज़ारों और इसी प्रयास में लगी हुई थीं। उनका साहस इतना था कि उनमें से कई मछलियाँ कूद-फाँदकर बाँध के दूसरी तरफ पहुँच भी रही थीं।

दरअसल बहाव के विपरीत जाने का मछलियों का यह प्रयास उनकी प्रजनन यात्रा का एक हिस्सा है। कुछ खास महीनों में वे प्रजनन के लिए नदी के ऊपरी हिस्से में आती हैं। मगर इन रेगुलेटरों व बाँधों के कारण इस यात्रा में रुकावट आ गई। मछलियाँ तो मूर्ख हैं। वे लगी हुई हैं, बाँध को पार करके अपने प्रजनन स्थान पहुँचने। उन्हें कौन समझाए कि बाँध पार करने के लिए सरकार से अनुमति लेनी पड़ती है, वरना...

बच्चा रसोईघर

निघत, बच्चा रसोईघर कार्यकर्ता

जब लॉकडाउन हुआ तो ये देखा गया कि यहाँ बस्तियों में सरकार की तरफ से कोई मदद नहीं आई। इसलिए यहाँ ज़मज़म पर एक कम्युनिटी किचन शुरू किया गया। फिर यहाँ से बस्तियों में खाना बाँटा जाने लगा। इन बस्तियों में गरीब से गरीब तबके के लोग हैं। अभी ये शुरू ही हुआ था कि तभी सरकार का ऐलान हुआ कि अब ये लॉकडाउन लम्बे समय तक रहेगा। तो अब खाना देने के लिए बस्तियों में जा भी नहीं सकते थे। तो फिर यहीं से हम लोगों को खयाल आया कि जब माँ-बाप को खाना नहीं मिल रहा है तो बच्चों को पोषण कैसे मिलेगा? क्योंकि उनकी हेल्थ के हिसाब से भी उनको खाना मिलना चाहिए। जहाँ से भी खाना आ रहा था बड़ों के हिसाब से ही आ रहा था। तीखा और ऐसा खाना जो बच्चे नहीं खा सकते। तब हमने सोचा कि बच्चों को बेहतर से बेहतर खाना कैसे दे सकते हैं। और फिर बच्चा रसोईघर की शुरुआत हुई।

इसका नाम हमने बच्चा रसोईघर इसलिए रखा क्योंकि यह सिर्फ किचन नहीं है, बल्कि बच्चों के लिए एक घर है। बच्चे इस घर में आएँ, खाना लें और अपना जितना समय यहाँ दे सकते हैं, दें। अभी हम तकरीबन 70 बच्चों को खाना दे रहे हैं।

हर हफ्ते मेन्यू के हिसाब से खाना बनता है। जैसे कभी बच्चों को अण्डा बिरयानी देते हैं ताकि उन्हें अण्डे का पोषण भी मिले और बाकी खाने का भी। ऐसे ही हम लोग सोयाबीन की बड़ी की बिरयानी भी देते हैं। जब से लॉकडाउन हुआ है आँगनबाड़ी सब बन्द पड़ी हैं। इस वजह से कुपोषित बच्चों तक खाना नहीं पहुँच पा रहा है। बच्चों को टीका भी नहीं लग पा रहा है। लॉकडाउन की वजह से पूरे दो महीने से ये सारी चीज़ें छूट रही हैं। तो हम लोग दो साल तक की उम्र के बच्चों को दूध देते हैं। साथ में रोज़ एक पारले-जी बिस्कुट का पैकेट भी देते हैं। तीन से पन्द्रह साल के बच्चों को हम लोग खाना देते हैं। अभी इतना बजट नहीं है कि हम लोग सबकी मदद कर सकें। लेकिन उन बच्चों की खास तौर से मदद करते हैं जिनके सिंगल पैरेंट हैं या जिनके माँ-पापा यहाँ नहीं हैं और वे अपने नाना-नानी/दादा-दादी के साथ रहते हैं।

हमने ये भी देखा कि इस वक्त बच्चों की पढ़ाई भी पूरी तरह बन्द हो रखी है तो फिर हमने लाइब्रेरी की शुरुआत करी। जो भी बच्चे खाना लेने आते हैं वो थोड़ा एक-दो घण्टे पहले ही आ जाते हैं। आकर हाथ धोते हैं और फिर लाइब्रेरी में या तो किताबें पढ़ते हैं या चित्र बनाते हैं। सुरक्षा का ध्यान रखते हुए बच्चों को एक-दूसरे से थोड़ा दूर ही बैठाते हैं। जो बच्चे किताब नहीं पढ़ पाते वे किताब के चित्र देखकर अपनी नई कहानी बना लेते हैं। बच्चे आपस में और हमसे भी अलग-अलग बातों पर चर्चा करते हैं। अभी यहाँ पर पन्द्रह वालंटियर काम कर रहे हैं।

बच्चा रसोईघर भोपाल के जनसम्पर्क समूह, परिन्दा, ज़मज़म होटल और अन्य युवा साथियों का प्रयास है।

पिछली बार हमने लॉकडाउन के दिनों में तुम्हारे हाल के बारे में पूछा था। क्या कर रहे हो, क्या सोच रहे हो, घर में किस तरह की बातें हो रही हैं? जब हमने रूम टू रीड, रायपुर, बच्चा रसोईघर और भोपाल के कुछ अन्य बच्चों से बातचीत की तो उनसे भी ऐसे ही कुछ सवाल किए। उनके कुछ जवाब हम यहाँ दे रहे हैं। तुम्हारा मन करे तो तुम भी हमें अपना हाल लिख भेजना...

"हम स्कूल जाते हैं। लेकिन अभी स्कूल जाने को नहीं मिल रहा। स्कूल में मज़ा आता था। अभी तो घर में बैठना पड़ता है। पापा अब फुग्गा बेचने भी नहीं जा पा रहे।"

"कोरोना सबको आ-आके लग रही है और लोग बेहोश हो रहे हैं। कोरोना आकर फिर चली जाती है। बाहर लॉकडाउन चल रहा है और डण्डे पड़ रहे हैं।"

"हमें पतंग उड़ाने भी नहीं मिल रिया है। पहले पार्क में घूमने जाते थे। अब नहीं जा पा रहे। अब्बू को पैसे भी नहीं मिल रहे। घर में खाना सही नहीं मिल रिया। दाल-चावल खाते रहते हैं बस। आलू की सब्ज़ी ही खाना पड़ता है बस।"

"कोरोना में सड़क सुनसान पड़ी है और हम मच्छी नहीं खा पा रहे। खेलने भी नहीं जा पा रहे। मच्छी पकड़ने भी नहीं जा पा रहे। पुलिस वाले भगा रहे हैं। कह रहे हैं कि ये आपकी भलाई के लिए है। ये बीमारी बहुत खतरनाक है। जेल में भी बैठा रहे हैं। बाहर घूम रहे हैं तो कह रहे हैं कि जेल में बैठो।"

"कोरोना एक बहुत खतरनाक बीमारी है। इसमें लोग बेहोश हो रहे हैं। और जिनको कोरोना है उनको हॉस्पिटल में भर्ती कर रहे हैं। स्टेडियम में जो-जो लकड़ी की दुकानें थीं उनको भी बन्द कर दिया। उनको काम में नहीं आने दे रहे हैं। और जो लोग दुकान खोल रहे हैं उनको पुलिस लाठी से मार रही है और जेलों में भी बन्द कर रही है। कह रही है जभी लॉकडाउन खुलेगा तभी आपकी मशीन चालू होगी और पैसे आएँगे।"

"उनको मारना नहीं चाहिए कुछ और रास्ते निकालने चाहिए। बेचारे पैदल बहुत दूर-दूर जा रहे हैं। बेचारे बच्चे लेकर जा रहे हैं उन लोगों को। ट्रेनें-वेनें भी नहीं हैं। उनके पैर भी दुख रहे हैं।"

"मोदीजी को ऐसे एकदम से बन्द नहीं करना चाहिए था। कुछ और उपाय निकालना चाहिए था ताकि मज़दूर अपने-अपने घर पहुँच जाएँ। और उन्हें मारना भी नहीं चाहिए था। कुछ और उपाय निकालना था।"

"जब कोरोना वायरस के चलते मम्मी-पापा लॉकडाउन में फँस गए थे तो मुझे बहुत रोना आया कि अब हम तीनों भाई-बहन क्या करेंगे? क्योंकि सभी दुकानें बन्द होने को आ गई थीं और आने-जाने का कोई साधन नहीं था। अब घर कैसे चलाएँ? क्योंकि सब सामान पापा ही लाते थे और मम्मी हम लोगों को बनाकर खिलाती थीं। जब-जब खाना बनाते और भाई लोगों के साथ खाते तो याद आती कि मम्मी-पापा खाए होंगे कि नहीं। और जैसे-जैसे घर का सामान खतम होता तो टेंशन होती कि कहाँ से लायें और कैसे करेंगे। मम्मी-पापा आ जाएँ तो हम पहले जैसे खुशी-खुशी रहेंगे।"

गर्मी के दिन

प्रतीक तिवारी, स्लैम आउट लाउड,
नई दिल्ली

गर्मी के दिन आते हैं
हमको बड़ा सताते हैं,
कहाँ खेलने जाएँ हम?
इतनी धूप कि निकले दम!

जिस दिन मैं बनी....

दुनिया की सबसे तेज़ धावक

विनता विश्वनाथन
चित्र: निहारिका शेनॉय

उन दिनों मैं होशंगाबाद के बोरी-सतपुड़ा के जंगलों में सात बहनों (बैब्लर) को पकड़ने की कोशिश कर रही थी। मुझे उन्हें पकड़कर छोड़ना ही था लेकिन उससे पहले उनकी एक टाँग पर एलुमिनियम की एक कड़ी और दूसरी पर तीन रंगीन कड़ियाँ पहनानी थीं। यह इसलिए कि उसके बाद मैं जब भी उन्हें देखूँ तो पहचान सकूँ। मुझे देखना था कि उनके व्यवहार में क्या विविधता है लेकिन भूरे रंग के ये सारे पक्षी एक जैसे ही दिखते हैं। उन्हें पहचान न पाती तो क्या पता दो-चार पक्षियों के ही व्यवहार को नोट करती रहती और उसे ही दस-बीस पक्षियों का व्यवहार बता देती।

इन्हें पकड़ना आसान नहीं था। (शायद इसलिए कि मैंने सही तरीका नहीं अपनाया था लेकिन इस बारे में बात फिर कभी करेंगे।) इसके लिए बाँस के दो लम्बे लट्ठ छह मीटर की दूरी पर लगाने थे। उनके बीच एक खास किस्म की जाली बाँधनी थी। 6 मीटर चौड़ी और लगभग 1 मीटर ऊँची यह जाली चार पट्टों की बनी थी और हर पट्टे का निचला हिस्सा जेब की तरह सिला था। इस जाली को ऐसी जगह बाँधना था जहाँ आसपास जाली में अटकने वाले कोई झाड़-पत्ते न हों लेकिन दोनों तरफ जंगल ज़रूर हो ताकि पक्षियों को जाली का पता न चले। अगर एक तरफ भी आसमान दिखता है तो दूसरी तरफ से देखने वाले पक्षी को जाली दिख जाती है।

उड़ते पक्षी या तो इस जाली से टकराकर इसमें फँस जाते हैं या फिर जेब में गिर जाते हैं। कुछ टकराकर उड़ भी जाते हैं। पक्षियों को पकड़ने का काम या तो पौ फटने से पहले शुरू होता है या देर शाम को क्योंकि दिन के उजाले में इन्हें धोखा देना इतना आसान नहीं है। जाली बाँधने की जगह हर रोज़ बदलनी पड़ती है, नहीं तो पक्षी सावधान हो जाते हैं। जाली को लगाकर उससे दूर तो बैठना ही पड़ता है लेकिन हर बीस मिनट में यह देखना भी होता है कि कहीं कोई पक्षी फँसा तो नहीं है। ऐसा करने के दो कारण हैं। एक तो बहुत देर तक फड़फड़ाने से पक्षी को चोट भी लग सकती है, खास कर जाली में ज़्यादा उलझने के कारण। और दूसरा अन्य जानवर उसे देखकर या तो भाग सकते हैं (इनमें वो पक्षी भी हो सकते हैं जिन्हें पकड़ना है) या फिर फँसे हुए पक्षी को पकड़कर खा भी सकते हैं।

खैर, तो सात बहनों को पकड़ने के लिए मैंने रामन और बिसराम को सुबह ही बाँस गाड़ने भेज दिया था और मैं अकेले ही दूसरी ओर निकल गई थी। एकाध घण्टे बाद मैं उस जगह पहुँची जहाँ उन दोनों को होना चाहिए था। उनके ना मिलने पर मुझे लगा कि उन्होंने काम खतम कर लिया होगा। मैं कमरे पर वापस जाने के लिए मुड़ी ही थी कि दूर एक सूखे नाले के किनारे पर एक रीछ दिखाई दिया। मैं एक पल रुककर उसे अपनी दूरबीन से देख ही रही थी कि अचानक से गुर्राहट की आवाज़ आई। मुझसे लगभग बीस मीटर की दूरी पर छींदे (एक झाड़) के पीछे से एक भयंकर बड़ा रीछ खड़ा हुआ और मेरी ओर दौड़ने लगा। मैं मुड़कर तेज़ भागी। कुछ दूर जाने के बाद मैंने देखा तो उसने मेरा पीछा छोड़ दिया था। उस दिन मैंने और काम नहीं किया, कमरे में ही बैठी रही।

बाद में मुझे समझ आया कि नाले के किनारे पर कोई बड़ा रीछ नहीं था, बल्कि एक छोटा रीछ था। मेरे दिमाग ने मुझसे ऐसा खेल क्यों खेला, पता नहीं। वैसे यह इतनी भी अनोखी बात नहीं थी – सब इस तरह से कभी न कभी बहक जाते हैं। लेकिन मेरे लिए यह खतरे की बात हो गई थी। पास वाली रीछ उस छोटे रीछ की माँ थी जिसे मैंने देखा नहीं था। मेरी खुशकिस्मती थी कि उसने मुझे कुछ दूरी से ही देख लिया था (कहते हैं कि रीछ की आँखें कमज़ोर होती हैं इसीलिए वे इन्सानों के काफी करीब पहुँच जाते हैं और फिर हादसे होते हैं)। पता नहीं उस दिन उस रीछ ने मुझे क्यों बख्शा लेकिन मेरा बचना उसका निर्णय था जिसके लिए मैं शुक्रगुज़ार हूँ।

जानवरों को पकड़ना जोखिम भरा काम होता है, खास कर जानवरों के लिए। शोध के लिए बिना नुकसान पहुँचाए उन्हें पकड़ना और थोड़ी देर बाद सही-सलामत वापस उनके इलाके में छोड़ना अक्सर हमारे लिए एक चुनौती होती है।

जानवरों को पकड़ने के अनेक तरीके हैं। हिरण, रीछ या हाथियों को पकड़ने के लिए उन्हें दूर से ही बेहोश करने वाली दवा की एक सुई बुलेट की तरह मारी जाती है। बाघ, शेर को अक्सर पिंजरे में रखी बकरी से आकर्षित कर पकड़ने की कोशिश की जाती है। सियार, भेड़िया को पैर के ट्रैप (लैग ट्रैप) से पकड़ते हैं। और छोटे पक्षियों को पकड़ने का सबसे आसान तरीका है – जालियाँ (मिस्ट नैट)।

मिस्ट नैट का तरीका 1950 के दशक से इस्तेमाल में है। अगर तुम्हें कभी इस तरीके को अपनाने का मौका मिले तो तुम देखोगे कि इस तरीके में पक्षी और शोधकर्ता दोनों तनावग्रस्त होते हैं। चिल्लाते-उछलते पक्षी को सावधानी से जाल से निकालकर, शान्त करके, उसका नाप वगैरह लेकर वापिस छोड़ना बड़े-बड़ों के लिए मुश्किल होता है। कभी-कभी पक्षी को चोट पहुँचती है और वे मर भी जाते हैं। आश्चर्य की बात है कि लगभग दस साल पहले तक ऐसा कोई शोध नहीं हुआ था जिससे यह पता चले कि मिस्ट नैट का तरीका आखिर कितने पक्षियों को त्रस्त करता है, मारता है। फिर एक शोध से पता चला कि सौ में से एक से भी कम पक्षी को चोट पहुँचती है और इससे भी कम मर जाते हैं। सबसे ज़्यादा चोट पंखों पर लगती है और ऐसा तनाव के कारण होता है। पक्षियों का वज़न जितना कम होता है उनको उतनी कम चोट लगती है, और जो पक्षी बार-बार पकड़ा जाता है उसे कम चोट लगती है।

वैसे इस तरह के किसी भी शोध प्रस्ताव को बहुत ही बारीकी से पढ़ा जाता है – क्या शोध इतना महत्वपूर्ण है कि जानवरों को तनाव पहुँचाना ज़रूरी है, क्या कम जानवरों को पकड़कर काम चल सकता है और क्या किसी अन्य तरीके से शोध सवाल का जवाब हासिल कर सकते हैं। अगर फिर भी जानवरों को पकड़ना ज़रूरी लगता है तभी इसके लिए अनुमति दी जाती है। हमारे देश में यह अनुमति वन विभाग देता है।

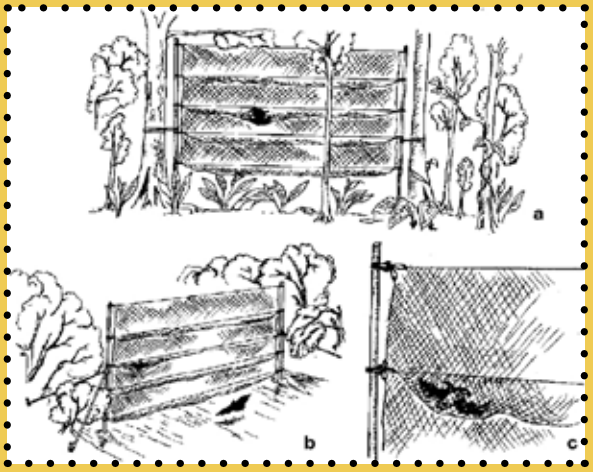

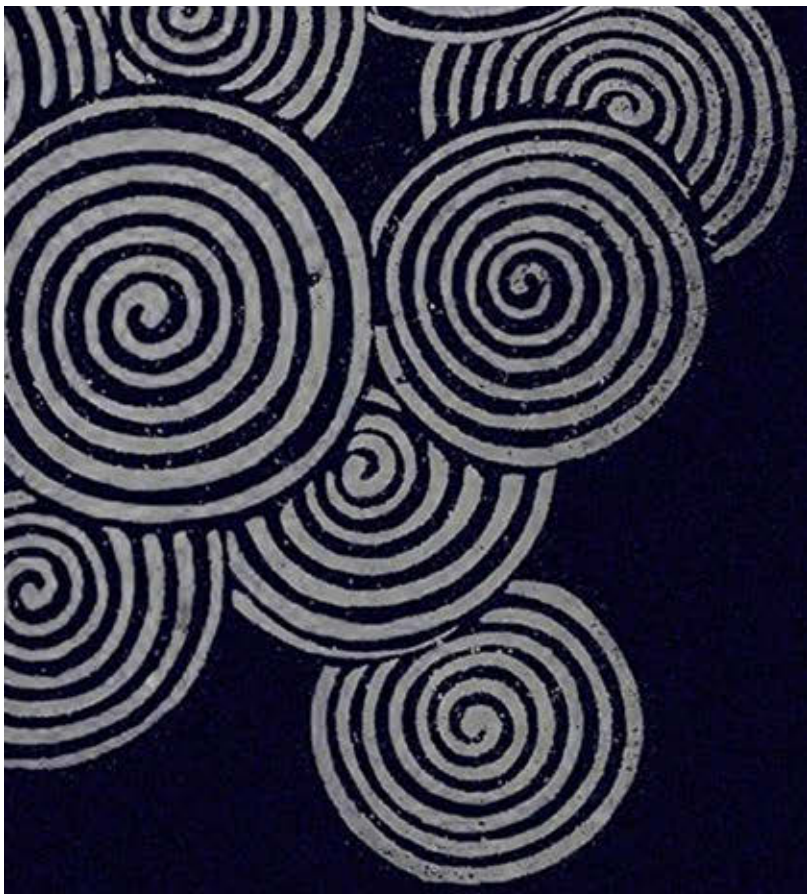

हामोन्शु

इशिता देबनाथ बिस्वास

हमारे आसपास की दुनिया पैटर्न से भरी हुई है। बादल, घास, ईंट की दीवारें, अलार्म घड़ी, कुत्ते का भौंकना, कौवे की काँव-काँव, हमारे जिस्म के बाल, पेड़ की डालियाँ, तालाब में बनी लहरें, मौसम, घूमता हुआ टायर वगैरह ज़्यादातर चीज़ों में एक पैटर्न होता है। और हर पैटर्न में एक लय होती है। इसका मतलब है कि पैटर्न समयबद्ध होते हैं। है न ये मज़ेदार बात?

किसी भी पैटर्न की सबसे खास बात यह होती है कि उसमें किसी खास चीज़ का दोहराव होता है। अगर मैं रात को देर-देर तक टीवी देखने लगूँ और अगले दिन देर से उठने लगूँ तो यह मेरे सोने का एक पैटर्न बन जाएगा। अगर मैं बहुत तेज़ कदमों से चलने लगूँ तो यह मेरे चलने का पैटर्न बन जाएगा। और मैं चलते वक्त भी पैटर्न बना सकती हूँ। मिसाल के लिए, कीचड़ में मेरे कदमों के निशान मिलकर एक पैटर्न बनाएँगे। अलग-अलग लोगों के हँसने का भी एक पैटर्न होता है। मेरी एक दोस्त है जो हँसते समय चूहे की तरह चिचियाने जैसी आवाज़ निकालती है, वो भी एक लय में। कभी-कभार उसके हँसने से ग्रुप के दूसरे लोग भी एक-एक कर ऐसे हँसने लगते हैं मानो कोई चेन रिएक्शन शुरू हो गई हो। यह भी एक पैटर्न ही है!

कुछ दिन पहले मैं एक तालाब के किनारे बैठकर पानी की सतह पर थोड़ी-थोड़ी देर में गिर रहे सूखे पत्तों और छोटी-छोटी डालियों को देख रही थी। कभी-कभार खाने के लिए कोई तिनका या घोंसला बनाने के लिए छोटी-छोटी डालियाँ ले जा रहे पक्षी भी तिनका या डाली पानी में गिरा देते। पानी की सतह पर जब भी पत्ते या तिनके गिरते तो किसी चेन रिएक्शन की तरह लहरों का पैटर्न बन जाता।

उस दिन मुझे लहरों के बारे में कुछ बातें समझ में आईं। जैसे कि, लहरें हमेशा गोलाई में होती हैं – तुम्हें तिकोन या सितारे जैसे आकार की लहर कभी नहीं देखने को मिलेगी। हर पैटर्न में दो लहरों के बीच की दूरी एक जैसी होती है और वो बढ़ते क्रम में होती है। जितनी भारी चीज़ पानी की सतह पर गिरेगी लहरों का पैटर्न उतना ही बड़ा होगा। यह सब देखकर मेरी उत्सुकता बढ़ गई। संयोग से उसी दौरान इंटरनेट पर एक बड़ी मज़ेदार चीज़ मेरे हाथ लगी।

अनुवाद: लोकेश मालती प्रकाश

हामोन्शु। इस शब्द का मतलब क्या होता है यह तो मुझे नहीं मालूम लेकिन यह किताब लहरों की आकृतियों के चित्रों का एक बेहतरीन संकलन है। 1903 में छपी इस किताब के चित्र जापानी कलाकार मोरी युज़ान ने बनाए हैं। इनके बारे में ज़्यादा जानकारी उपलब्ध नहीं है। ऐसा कहा जाता है कि ये जापान के क्योटो शहर के रहने वाले थे और जापानी कला की निहोंगा शैली में काम करते थे। *हामोन्शु* तीन खण्डों की पुस्तक शृंखला है जिनका नाम है वेव डिज़ाइन ए, बी एंड सी।

इन पैटर्न को देखना कितना मज़ेदार है ना? क्या तुमने पानी को कभी इस तरह से देखा है? पैटर्न का यही तो जादू है। काली स्याही से बनाए गए इन चित्रों का इस्तेमाल जापान में तलवारों, लकर व दूसरे सजावटी सामानों पर डिज़ाइन उकेरने के लिए किया जाता था।

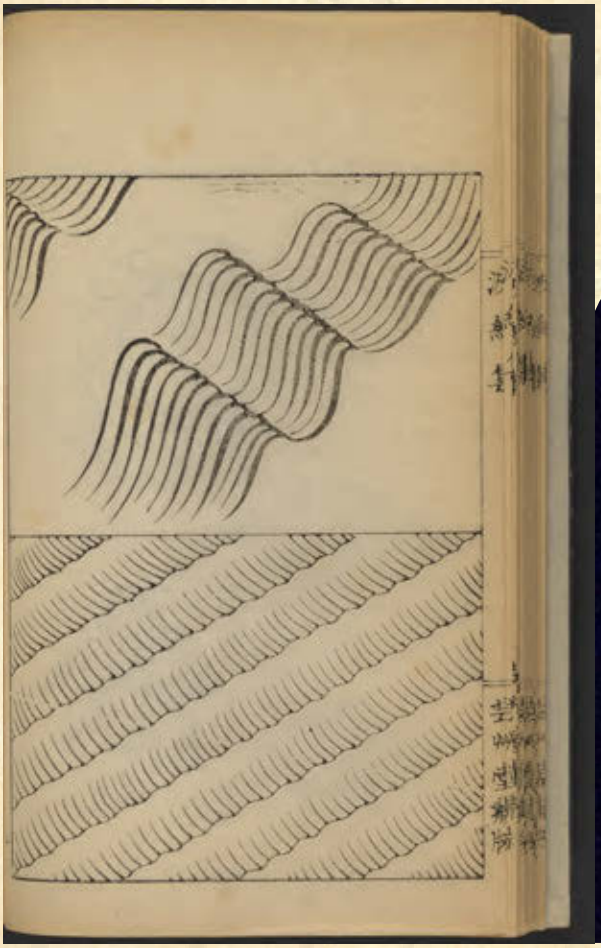

चित्र. हामोन्शु पैटर्न से सजा जापानी तलवार का गार्ड

चित्र – लाख द्वारा उकेरी गई डिज़ाइन से सजा जापानी बॉक्स

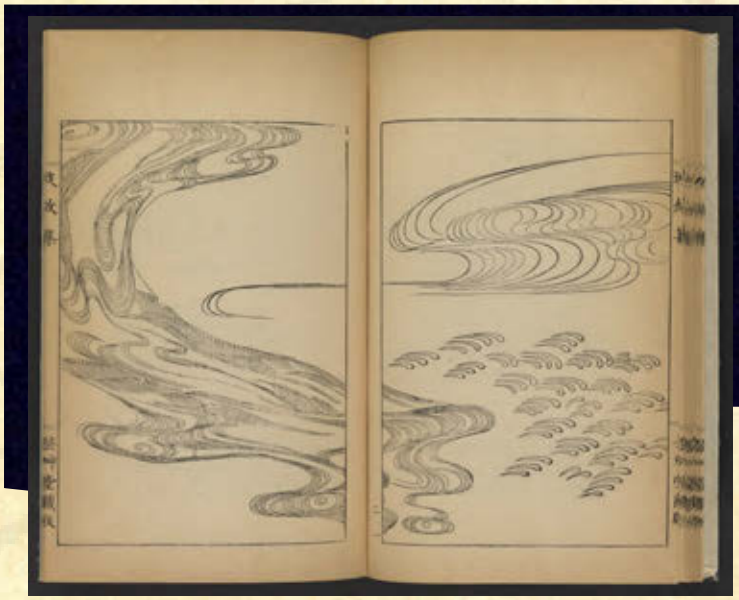

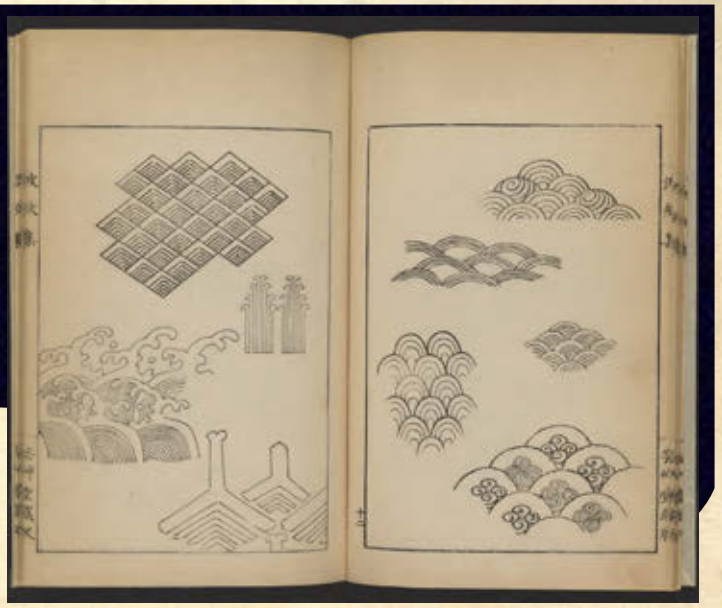

लेकिन मुझे लगता है कि हमें हामोन्शु को महज़ सजावटी इस्तेमाल की चीज़ नहीं मानना चाहिए। मोरी युज़ान की कृति इससे कहीं ज़्यादा महत्वपूर्ण है। उनके चित्र पानी के पैटर्न की उनकी खास कलात्मक समझ को दर्शाते हैं। यह सही है कि वे ऐसा ही काम करने वाले दूसरे जापानी चित्रकारों की तरह मशहूर नहीं हुए। लेकिन ये रेखाचित्र ज्यामिति और तरलता के मिश्रण का अद्भुत नमूना हैं। इनको देखकर आप सोचने लगते हैं कि हमारे आसपास ऐसी और कौन-सी चीज़ें हैं जिनको इस तरह से देखा जा सकता है?

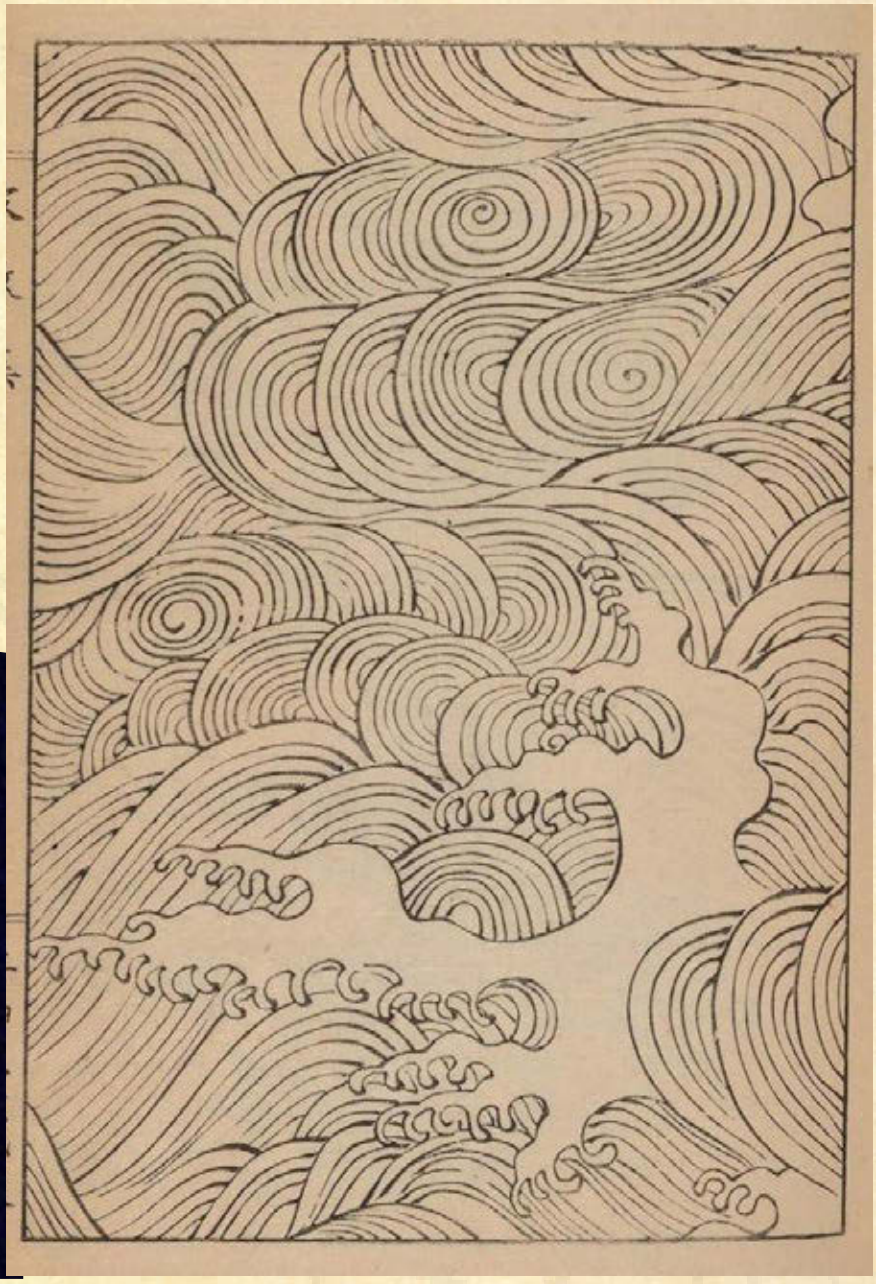

चक मक

तुम इन पैटर्न के चित्र बनाने की कोशिश क्यों नहीं करते? पैटर्न की नकल उतारना बड़ा मज़ेदार काम है। हो सकता है इनको बनाते समय तुम्हें अपने आसपास की ऐसी चीज़ों का ध्यान आए जिनमें ऐसे ही पैटर्न हों। या हो सकता है तुम्हें कुछ नए पैटर्न ही दिखने लगें! क्या पता? तुम इन किताबों को इंटरनेट आर्काइव (archive.org) से डाउनलोड कर खुद भी इनका लुत्फ उठा सकते हो।

स्रोत – https://archive.org/search.php?query=creator%3A%22Mori%2C+Yu%CC%84zan%2C+-1917%22
https://publicdomainreview.org/collection/hamonshu-a-japanese-book-of-wave-and-ripple-designs-1903

जामुन

रामकरन
चित्र: नीलेश गेहलोत

पड़ोसी का जामुन
हुआ जब बड़ा,
थोड़ा उधर बढ़ा
थोड़ा इधर बढ़ा।

डालें गदराईं
पेड़ झबराया,
बौरा वह खूब
मौसम जब आया।

काले-काले जामुन
लटके पड़े,
कभी इधर गिरे
कभी उधर गिरे।

बीन-चुन खाया
भूना न तला,
बड़ा मज़ा आया
जो जामुन फला।

नाक में अटके चुम्बक निकलवाने ये पहुँचे अस्पताल

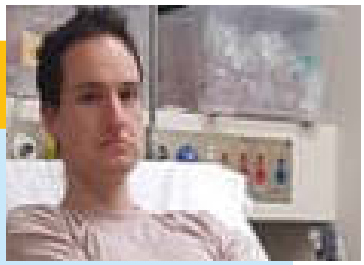

यह बात तो अब हम सबको पता है कि चेहरे को बार-बार छूने से कोविड-19 से संक्रमित होने की सम्भावना बढ़ती है। यह इसलिए कि अगर चेहरा छूने से पहले हमने कोई ऐसी चीज़ या सतह छुई हो जिस पर ये वायरस थे तो अब हम इन्हें जल्द ही अपने शरीर में पहुँचा देंगे। तो ज़रूरी है कि हम अपने चेहरे से अपने हाथों को दूर रखें।

लॉकडाउन में ऑस्ट्रेलिया के तारा भौतिकविद (एस्ट्रोफिजिसिस्ट) डॉ रियर्डन डैनियल अकेले घर पर बैठे बोर हो रहे थे। तभी उन्हें सूझा कि क्यों न कुछ चुम्बकों से ऐसा कड़ा बनाएँ जिसे अपनी कलाई पर पहन सकें और जैसे ही हमारा हाथ चेहरे के पास जाए तो एक बज़र बजने लगे। लेकिन गलती से उन्होंने ऐसी चीज़ बना दी जो तब तक बजती रहती है जब तक हमारा हाथ हमारे चेहरे को छू ना ले!

निराश होकर वो इन ज़बरदस्त चुम्बकों को कानों और नाक के अन्दर व बाहर लगाकर बैठ गए। कानों से इन्हें निकालना तो आसान था। लेकिन जब नाक के बाहर वाले चुम्बकों को हटाया तो अन्दर वाले चुम्बक एक-दूसरे से यों चिपके कि अस्पताल जाकर ही निकल पाए। अस्पताल जाने से पहले चुम्बकों को निकालने की कोशिश में उन्होंने दो और चुम्बक नाक में घुसा दिए और वो प्लायर भी जिससे वे चारों को निकालने की कोशिश कर रहे थे।

तुम भी जानो

व्योम मित्र: एक मानव-रोबोट

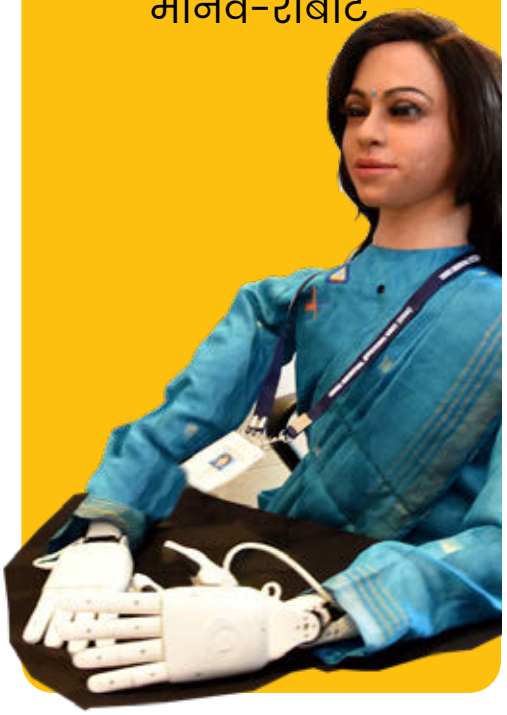

भारत का पहला मानवयुक्त अन्तरिक्ष मिशन गगनयान 2021-22 के दौरान उड़ान भरेगा। अन्तरिक्ष में मनुष्य को भेजने से पहले भारतीय अन्तरिक्ष अनुसन्धान संगठन (इसरो) ट्रायल के तौर पर दो मानवरहित मिशन भेजेगा। इस मिशन पर व्योम मित्र शामिल होगा जो मूल रूप से मानव की सूरत वाला एक रोबोट है। उसके पास सिर्फ सिर, दो हाथ और धड़ है। निचले अंग नहीं हैं।

किसी भी रोबोट की तरह मानव-रोबोट के कार्य भी उससे जुड़े कम्प्यूटर सिस्टम द्वारा संचालित किए जाते हैं। कृत्रिम बुद्धि (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) और रोबोटिक्स के विकास के साथ ऐसे कार्यों के लिए मानव-रोबोट का तेज़ी-से इस्तेमाल किया जा रहा है जिनमें बार-बार एक-सी क्रियाएँ करनी होती हैं, जैसे कि रेस्तरां में बैरा।

पूरी तरह से विकसित होने के बाद, व्योम मित्र मानवरहित उड़ान के लिए ग्राउंड स्टेशनों से भेजे गए सभी निर्देशों को अंजाम देने में सक्षम होंगे। इनमें सुरक्षा तंत्र और स्विच पैनल का संचालन करने की प्रक्रियाएँ शामिल होंगी। वे प्रक्षेपण, लैंडिंग और मानव मिशन के कक्षीय चरणों के दौरान अन्तरिक्ष यान की सेहत जैसे पहलुओं से सम्बन्धित ऑडियो जानकारी प्रदान करने में अन्तरिक्ष यात्री के कृत्रिम दोस्त की भूमिका निभाएँगे।

सोहम भी जलपरी

हर्षवर्द्धन कुमार

काव्या पापा के लैपटॉप पर चकमक का अप्रैल अंक पढ़ रही थी। कोरोना वायरस के कारण तीन सप्ताह का लॉकडाउन था और इसलिए चकमक इस बार डाक से नहीं बल्कि ईमेल से आई थी। इस बार की चकमक में जलपरी के बारे में विवाद पढ़कर काव्या को बहुत बुरा लगा। जलपरी के अभिनय के लिए चुनी गई अभिनेत्री के गोरे न होने पर बहस किया जाना उसे बिलकुल भी अच्छा नहीं लगा। उसने यह बात अपने मम्मी-पप्पा को भी बताई। पापा ने कहा, "अरे! नाराज़ मत हो। कोई कुछ भी कहे, मेरे लिए तुमसे अच्छी जलपरी कोई और हो ही नहीं सकती।" पापा की बात सुनकर काव्या का चेहरा खिल उठा। उसने मम्मी से कहा, "देखा माँ! पापा ने क्या कहा?" मम्मी ने भी हँसते हुए हामी भरी। बात अभी पूरी भी नहीं हुई थी कि काव्या के छोटे भाई सोहम ने टोकते हुए कहा, "काव्या सबसे अच्छी जलपरी तो तभी बन सकती है जब मैं जलपरी न बनूँ!" सोहम की बात सुनकर सब हँसने लगे। काव्या बोली, "जा, जा! तू तो लड़का है। कोई लड़का कैसे जलपरी बन सकता है?" सोहम पापा की ओर मुड़ते हुए बोला, "पापा आप तो हम लोगों से कहते हैं कि लड़के और लड़की दोनों बराबर हैं। फिर ये तो ठीक बात नहीं है कि केवल दीदी जलपरी बन सकती है और मैं नहीं।" अब सबकी हँसी गायब थी। मामला गम्भीर हो गया था। पापा-मम्मी समझ ही नहीं पा रहे थे कि मामला कैसे सुलझाएँ। उनकी बहस देर तक किसी नतीजे पर नहीं पहुँची। बात तो सोहम की भी सही थी मगर काव्या बेहद नाराज़ हो गई। कहने लगी, "मछली जल की रानी होती है मगर कोई मछला जल का राजा नहीं होता।" उसने तो गुस्से में यह तक कह दिया कि जैसे कोई लड़की उल्लू नहीं हो सकती, कोई लड़का भी जलपरी नहीं हो सकता। इस बहस के लिए काव्या और सोहम लगातार नए-नए तर्क दे रहे थे। समझौते की कोई सूरत नज़र नहीं आ रही थी।

क्या तुम बता सकते हो कि इस बहस को कैसे सुलझाया जा सकता है? अगर तुम्हें इस मसले को सुलझाना हो तो तुम क्या तर्क रखोगे? chakmak@eklavya.in पर अपने विचार हमें लिख भेजो या 9753011077 पर हमें व्हाट्सऐप भी कर सकते हो। हो सकता है अगले अंक में तुम्हारे विचारों को पढ़कर काव्या और सोहम का झगड़ा खतम हो जाए।

मंज़ूर

गीता धुर्वे
चित्र: शेफाली जैन

मंज़ूर को तैयार होना बहुत पसन्द है, खास तौर से काजल लगाना। आईने के छोटे टुकड़े को एक हाथ से पकड़कर बहुत बारीकी से वह आँखों में ऊपर-नीचे दोनों तरफ काजल लगाता और अपनी आँखों को नचाता। ठीक वैसे ही जैसे लोग कुचिपुड़ी नृत्य करते हुए अपनी आँखें मटकाते हैं। फिर खुद को आईने में देख बहुत खुश होता। कभी-कभी वह अपने माथे पर छोटी-सी टीकी भी लगा लेता।

उसकी बहुत सारी सहेलियाँ हैं। एक दिन उसने अपनी सहेली चाहत का घाघरा-चोली पहना और लाली लगाकर उससे पूछा, “मैं सुन्दर दिख रहा हूँ ना? चल अपन फोटो खिंचवाकर आते हैं।”

चाहत ने कहा, “हट! तेरी मम्मी देखेंगी तो तुझे तो मारेंगी ही, मुझे भी मारेंगी। मैं नहीं जाऊँगी।”

मंज़ूर चाहत का हाथ पकड़ते हुए बोला, “चल ना। मेरे पास तो ऐसे कपड़े हैं नहीं। और मम्मी-पापा के सामने पहन भी नहीं सकता ऐसे कपड़े। चल ना, जल्दी आ जाएँगे।”

चाहत बोली, “ठीक है। चल। लेकिन पहले ये कपड़े उतार और लाली पोंछ।”

“पर क्यों?”, मंज़ूर ने पूछा।

चाहत बोली, “यहाँ से तैयार होकर जाएगा तो लोग तुझे देखकर हँसेंगे। मुझे अच्छा नहीं लगेगा। इसलिए वहीं जाकर पहन लेना।”

मंज़ूर को चाहत का ये सुझाव पसन्द आया। वह फट-से तैयार हो गया। “ठीक है चल, मैं वहाँ और अच्छे-से तैयार हो जाऊँगा। तू अपनी चूड़ी भी दे देना। मैं सब पहनना चाहता हूँ।”

बचपन से ही मंज़ूर को अपनी सहेलियों के रंग-बिरंगे सुन्दर कपड़े पहनना और नाचना बहुत अच्छा लगता। उन कपड़ों को पहनकर वह ऐसे खुश होता जैसे उसे सब कुछ मिल गया हो। जब वो अपनी सहेलियों के साथ लकड़ी बीनने जाता तो अक्सर उसकी नज़र कबाड़ में पड़े लेडीज़ पर्स पर जाकर टिक जाती। वह लेडीज़ पर्स में लाली, पाउडर और मेकअप का सामान ढूँढ़ता। और कई बार उसे लाली, पाउडर व कंगन के साथ-साथ चूड़ियाँ भी मिल जातीं। फिर तो मंज़ूर को तैयार होने में ज़रा भी देर नहीं लगती। लाली-पाउडर लगाकर और कंगन-चूड़ी पहनकर वह आसपास खड़ी गाड़ियों के छोटे-छोटे आईनों में खुद को देख इतराने लगता। फिर अपनी पैंट की जेब में दोनों हाथ डालकर गोल-गोल घूमता। अपनी सहेलियों से दुपट्टा लेकर उसे लहराते हुए नाचता।

मंज़ूर बचपन से वही सारे खेल खेलता जो उसकी सहेलियाँ खेलतीं, जैसे घर-घर, खो-खो, रस्सीकूद

वगैरह। उसने गोला गुचू और कंचे वाले खेल कभी नहीं खेले। उसे तो घर-घर खेलना पसन्द था। इसमें वह अपनी मर्ज़ी का किरदार जो चुन सकता था। वह हमेशा लड़की का किरदार निभाता। कभी माँ, कभी बहिन तो कभी बीवी का। मर्दों वाला किरदार निभाना उसे अच्छा नहीं लगता। शुरू में मंज़ूर की सहेलियाँ उस पर हँसतीं। तब वह बड़ा दुखी होता। कई बार रोता भी। पर वह अपनी सहेलियों के साथ रहना चाहता था। इसलिए वह खुद भी उनके साथ हँसने लगता।

जब मंज़ूर की मम्मी को पता चलता कि उनके बेटे ने लाली-पाउडर लगाया और कंगन-चूड़ी पहनीं तो उनका गुस्सा सातवें आसमान पर होता। वो पूरी बस्ती में लकड़ी लेकर घूमतीं कि कब मंज़ूर उनके हाथ लगे और वो वहीं उसकी जमकर पिटाई कर दें। दिन भर तो वह सहेलियों के साथ खुश रहता। पर घर लौटने का वक्त होते ही उदास हो जाता। उसे पता होता था कि आज भी घर पर मार पड़ेगी। माँ को मनाना तो आसान था, पर पापा...। एक बार उनके हाथ लग गया तो घर में बाँधकर मारते। कहते, "लाली-काजल लगाएगा? लड़की बनने का बड़ा शौक है? लड़कियों के साथ घूमेगा? मोहल्ले में नाक कटवाएगा?" पापा की मार से ज़्यादा मंज़ूर उनकी बातों से परेशान होता और बहुत रोता। रोने पर भी उसके पिता कहते कि यह लड़कियों जैसे रोना बन्द कर।

मंज़ूर अपनी सहेलियों के साथ रात में भी खेलता। उसकी मम्मी उसे बुला-बुलाकर ले जातीं और कहतीं, "कितनी बार समझाया है कि लड़कियों के साथ मत रहा कर। तू लड़कियों की तरह क्यों चलता है?" मंज़ूर की मम्मी उसे बहुत कुछ कहतीं और फिर खुद भी रोतीं। क्योंकि मंज़ूर की वजह से महल्ले के लोग उन्हें ताने मारते। लोग मंज़ूर को तरह-तरह की बातें कहते। कड़बा (हिजड़ा) बोलते। उसे उनकी बातों पर गुस्सा तो आता पर वो उन पर ज़्यादा ध्यान नहीं देता। लेकिन जब घर के लोग उसे इस तरह की बातें कहते तो उसे बहुत बुरा लगता। ऐसा लगता जैसे वो अपने माँ-बाप की औलाद ही नहीं हो।

चाहत और तमन्ना मंज़ूर की सबसे चहेती सहेलियाँ थीं। उन्होंने कभी मंज़ूर को खुद से अलग नहीं माना। वह जैसा था उन्होंने उसे वैसा ही अपनाया था। उनके साथ घूमना, काम करना मंज़ूर को बहुत सुकून देता। अपनी सहेलियों के साथ उसने खाना बनाना, गोबर लीपना, झाड़ू-पोंछा करना जैसे कई काम सीखे। उसे दो-तीन घरों में झाड़ू लगाने और कचरा फेंकने का काम भी मिल गया। दीवाली के समय जब वह लोगों के घर के आँगन में गोबर लीपने-पोतने का काम करता तो महल्ले के लोग उसे "पेड़गी-पेड़गी" कहकर बहुत चिढ़ाते। पेड़गी यानी वह लड़का जो लड़कियों के काम में हाथ बँटाता या लड़कियों जैसे काम करता है। मंज़ूर ने कभी किसी की बात का बुरा नहीं माना।

एक दिन चाहत ने मंज़ूर को उसके नाम का मतलब बताया। "गोंडी में मंज़ूर यानी मोर। वही मोर, जो बेहद खूबसूरत है। सुन्दर रंगों से सजे उसके पंख उसकी खूबसूरती को बयाँ करते हैं लेकिन उसके पैर बदसूरत हैं। मोर की खूबसूरती को तो लोगों ने अपनाया है लेकिन उसके शरीर के एक ज़रूरी हिस्से को नकारा है। वैसे मंज़ूर का एक अर्थ 'कबूल करना' या 'स्वीकारना' भी है।"

चाहत की बातों को सुनकर मंज़ूर बोला, "मैं मंज़ूर हूँ, क्या इसलिए मुझे किसी ने नहीं अपनाया?" क्या मैं बहुत अजीब हूँ? क्या मैं जिस पहचान के साथ जीना चाहता हूँ उसको कहीं जगह मिलेगी?"

मंज़ूर को अपने सवालों का जवाब अब तक नहीं मिला।

भाग – 2

बोरेवाला

मूल तेलुगू कहानी: जयश्री कलाथिल
चित्रांकन: राखी पेशवानी
अँग्रेज़ी से अनुवाद: शशि सबलोक

यह कहानी अन्वेषी द्वारा विकसित की गई डिफरेंट टेल्स का हिस्सा है। डिफरेंट टेल्स क्षेत्रीय भाषा की कहानियाँ ढूँढ़-ढूँढ़कर निकालता है, ऐसी कहानियाँ जो ज़िन्दगी की बातें करती हैं – ऐसे समुदायों के बच्चों की कहानियाँ जिनके बारे में बच्चों की किताबों में बहुत कम पढ़ने को मिलता है।

अनु की गर्मियों की छुट्टियाँ शुरू हो गई हैं। चार महीने पहले ही उसकी सजीचेची की मौत हो जाती है। तब से अम्मा उदास रहने लगती हैं और अच्चन भी घर में कम ही दिखाई देते हैं। वे देर रात घर लौटते हैं। एक दिन पीछे के दरवाज़े पर कुछ आवाज़ होती है। अनु खिड़की से झाँकती है तो वहाँ चाकप्रान्दन खड़ा होता है। वो जानती है कि चाकप्रान्दन भूखा होगा पर डर के मारे उसे कुछ नहीं देती। फटी-पुरानी बोरियों के थेगड़ों को सिलकर पहनने वाला चाकप्रान्दन काफी अजीब लगता है। थोड़ी देर में चाकप्रान्दन वहाँ से चला जाता है और अनु सोचती है कि अगर वह कल भी आया तो वह थोड़ी हिम्मत करके उसे कुछ खाने को दे देगी। अब आगे...

उस रात मैं अच्छे से सो नहीं पाई। एक मच्छर लगातार मेरे कानों में भिनभिनाता रहा। और बीच-बीच में जब झपकी लगी भी तो एक ही सपना चलता रहा। वो यह कि फातिमा टीचर ने मुझ अकेली को क्लास में रोक लिया है और कह रही हैं कि जब तक मेरी लिखाई नहीं सुधरती वो मुझे छोड़ेंगी नहीं। पर जब मैं एक सीधी लकीर में लिखने की कोशिश करती मेरी लाइन "त्रिशूर से टिम्बकटू" की ओर चल देती। सजीचेची ऐसा ही कहती थी।

नीचे से आवाज़ें आ रही थीं। मैं नीचे गई तो देखा कि वल्यअम्मा नीचे रसोई में थीं। वल्यअम्मा मेरी बड़ी मौसी हैं – मुझे वो सबसे ज़्यादा पसन्द हैं। वो कहती थीं कि सजीचेची और मैं बड़े होकर वल्यअम्मा और अम्मा जैसे ही होएँगे। पर अब सजीचेची के चले जाने के बाद पता नहीं मैं बड़ी तो कैसे होऊँगी।

अम्मा स्टूल पर बैठी थीं। वल्यअम्मा तौलिए से उनके बाल सुखा रही थीं। और उन पर गुस्सा हो रही थीं।

"थोड़ी कोशिश तो करनी ही पड़ेगी न शारदा," वल्यअम्मा बोल रही थीं। "कह नहीं सकती इतनी तेज़ धूप में खेतों से होते-होते रोज़-रोज़ तुम्हारे पास कब तक आ सकूँगी। यहाँ आने के लिए ऑटो भी तो नहीं मिलता।"

अम्मा कुछ नहीं बोलीं। बस सिर झुकाए बैठी रहीं।

"कल तुमने अपनी दवाई ली?" वल्यअम्मा ने पूछा। "ठेके में शामें बिताने की बजाय काश रामू अपनी थोड़ी ज़िम्मेदारी समझता। तुम दोनों शायद भूल गए हो कि तुम्हारी एक बच्ची भी

है, जो अभी ज़िन्दा है। वो आवारा बिल्लियों की तरह सारा दिन यहाँ-वहाँ भटकती रहती है। तुम दोनों ने कभी फिक्र की है कि उसने खाया-पिया है कि नहीं, स्कूल टाइम पर जा रही है कि नहीं?"

वल्यअम्मा का इस तरह बोलते जाना मुझे बिलकुल अच्छा नहीं लगता। मैं जानती थी कि वो अघा गई हैं। पर इससे अम्मा और भी उदास और डिप्रेस हो जाती हैं। सो मैं अन्दर चली गई और मुझे देखकर वो चुप हो गईं।

"अनु, नींद अच्छी आई? कॉफी चाहिए?"

मैंने कॉफी ली और अम्मा के बगल में बैठ गई। उन्होंने मेरे सिर पर हाथ फेरते हुए कहा, "तो आज तो स्कूल नहीं है। क्या सोचा है...क्या करोगी पूरे दिन?"

"मैं रशीदा से मिलने जाऊँगी। फिर हम इंग्लिश स्कूल के मैदान में खेलेंगी।"

"धूप में न खेलना। लू लग जाएगी।" अम्मा स्टूल से उठते हुए बोलीं।

"नाश्ता नहीं करोगी?" वल्यअम्मा ने अम्मा से पूछा।

"करूँगी। पर थोड़ा लेट लूँ पहले," कहती हुई अम्मा सीढ़ियाँ चढ़ने लगीं।

वल्यअम्मा कुछ कहने को हुईं, पर रुक गईं। फिर मेरी तरफ देखती हुई बोलीं, "मंजन कर लो। फिर नाश्ता कर लेना। मैंने उपमा बनाया है।"

अच्चन काम पर जा चुके थे। नाश्ते के बाद वल्यअम्मा ने अम्मा को ज़बरदस्ती दूध के साथ दवाइयाँ दे दीं। अम्मा को दवा लेना पसन्द नहीं था। वो कहती थीं कि दवाओं से उन्हें नींद आती है। कभी-कभी मुझे लगता था यह सही भी है। वल्यअम्मा जब नहीं होतीं तब दवा लेने के लिए मुझे अम्मा के पीछे नहीं पड़ना चाहिए।

वल्यअम्मा के जाने के बाद मैंने फ्रिज खोलकर देखा। उन्होंने बहुत सारा खाना बना रखा था। चलो, अम्मा को इस बारे में तो नहीं सोचना पड़ेगा। तो अब क्या किया जाए? कुछ सूझा नहीं तो सोचा चलो कुछ लिखती हूँ। हो सकता है कहानी लिख लूँ तो अच्चन उसे पढ़ने, उसे ठीक करने के बहाने एक शाम मेरे साथ गुज़ार लें।

मैंने एक छोटी लड़की डेज़ी के बारे में लिखा जिसके पास जादुई शक्तियाँ थीं। वो पेड़ों, पशुओं और चिड़ियों से बात कर सकती थी। उनकी बातें सुन सकती थी। इसलिए उसे कभी अकेलापन नहीं महसूस होता था। पर अब इसके आगे क्या लिखूँ... कुछ सूझ नहीं रहा था। उससे क्या कारनामे करवाऊँ – कुछ सोच नहीं पा रही थी।

फिर मैंने सोचा चलो रशीदा के घर चलती हूँ। अम्मा को बोलने गई तो देखा वो दीवार की ओर मुँह किए सो रही हैं। मैंने धीरे-से कहा, "जा रही हूँ।" कोई जवाब नहीं मिला तो मैं यूँ ही चल दी।

रशीदा मेरे घर से ग्यारह घर दूर रहती थी। इंग्लिश स्कूल के पास। वो भी बोर हो रही थी। उसे भी कुछ सूझ नहीं रहा था। हमने थोड़ी देर क्रिकेट खेला। फिर धूप तेज़ हो गई तो हम उसके घर गए और साँप-सीढ़ी खेलने लगे। रशीदा ने बताया कि वो दो हफ्तों के लिए अपने कज़िन के घर एर्नाकुलम जा रही है।

"हम वहाँ वॉटर वर्ल्ड जाएँगे, नाव में बैठेंगे और खूब सारी फिल्में देखेंगे," वो बोली। "तुम भी कहीं जा रही हो क्या?"

"नहीं। मैं बस टीवी में फिल्में देखूँगी और वीडियो देखूँगी।" रशीदा ने कहा उसके पास "बालरमा" की नई सीरीज़ है। वो मुझे पढ़ने के लिए दे देगी। लौटते वक्त मैंने सोचा क्यों न डेज़ी से वॉटर वर्ल्ड के कुछ कारनामे करवा लिए जाएँ।

अम्मा अभी भी बिस्तर पर थीं। वो लेटी थीं, सो नहीं रही थीं। "रशीदा के घर अच्छा लगा?" उन्होंने पूछा। मैंने बताया कि रशीदा अपने कज़िन के घर एर्नाकुलम जा रही है। अम्मा ने कहा मैं चाहूँ तो मैं भी अपने कज़िन के घर कालीकट जा सकती हूँ। मैंने मना कर दिया। अम्मा और अच्चन को इस तरह अकेले छोड़ जाना कोई नेक खयाल नहीं था। और फिर कालीकट में मेरे साथ खेलने वाला कौन होगा! वहाँ मेरे सारे कज़िन तो कॉलेज में पढ़ते हैं।

मैं "बालरमा" पढ़ने लगी। खेलने और देर तक धूप में रहने से मेरी आँख लग गई। जब मैं उठी तब तक अँधेरा हो गया था। मैं बत्ती जलाए बगैर लेटी रही। तभी पीछे के दरवाज़े पर ज़ोर का शोर हुआ। मैंने रसोई की खिड़की से देखा। चाकुप्रान्दन खड़ा था।

हालाँकि मैंने तय कर लिया था कि आज वो आया तो उसे खाना दूँगी, पर मुझे अभी भी डर लग रहा था। मैं ऊपर गई। सोचा अम्मा को बुला लाऊँ। पर कोई जवाब न मिला।

मैं फिर से रसोई में आई और थोड़ा-सा दरवाज़ा खोल दिया। चाकुप्रान्दन ने मुझे देखा और अपनी प्लेट मेरी ओर बढ़ा दी। वो जगह-जगह से मुड़ी-तुड़ी और पिचकी हुई थी। मैंने उससे इन्तज़ार करने को कहा और रसोई में आकर एक प्लेट में चावल और साम्भर परोस दिया। एक पापड़ भी रख दिया। फिर वह प्लेट रसोई के दरवाज़े के बाहर रखकर जल्दी से पीछे हट गई। चाकुप्रान्दन ने प्लेट उठाकर अपनी प्लेट में पलट दी। फिर वह वहीं बैठकर खाने लगा।

मैं उसे खाते देखती रही। उसके बाल धूल से सने थे। दाढ़ी घनी थी। माथे पर ज़ख्म का एक छोटा-सा निशान था। दोनों हाथों पर मच्छरों के काटने के निशान थे। उसने अपने बोरे में मुँह घुसाकर कुछ ढूँढ़ा और टीन का एक मग्गा निकाल लिया। यह उसकी प्लेट जैसा ही मुड़ा-तुड़ा था। मैं मुड़ी और जग में पानी ले आई।

फिर वहीं बैठकर चुपचाप उसे देखने लगी। कोशिश कर रही थी कि उसे घूरती न रहूँ। वह जल्दी-जल्दी खा रहा था, बिना बहुत चबाए। खाने के बाद वो कुछ बोला। "कल" जैसा कुछ। और चला गया।

चाकुप्रान्दन के जाने के बाद मैं टीवी देखने लगी। सोचा था जब तक अच्चन नहीं आते टीवी देखती रहूँगी। वो नौ बजे आए। सिगरेट और रम की बू आ रही थी। सजीचेची के जाने से पहले वो बहुत कम पीते थे। आर्मी वाले करुनन मामा जब कभी उनके लिए रम लाते तब या कभी-कभार शादियों में। पर अब तो वो रोज़ ही पीकर आते थे। यह अच्छा नहीं था, पर मैं कर क्या सकती थी। ऐसे में सबसे बढ़िया तो यही था कि "कुछ गलत नहीं है" का स्वांग रचकर रहा जाए।

लुंगी पहनने के बाद अच्चन रसोई की तरफ गए। मैं भी उनके पीछे-पीछे हो ली।

"तुमने खाना खा लिया?" उन्होंने पूछा।

"नहीं, आपका इन्तज़ार कर रही थी।"

"मैंने तुम्हें कहा था ना कि इसकी कोई ज़रूरत नहीं है। अपनी माँ के साथ खा लिया करो। यही ठीक है। उन्होंने खा लिया?"

उनकी आवाज़ में कुछ ऐसा था जिससे मैं उखड़ गई। "आपको इसकी कब से फिक्र हो गई? वो ठीक से खाए-पिएँ, इसके लिए आपने तो कुछ नहीं किया।"

उन्होंने सिर झुका लिया और आँखें बन्द कर लीं। मैं जानती थी कि मैंने उनका दिल दुखाया है। मुझे बुरा लगने लगा। मैं तुरन्त बोल पड़ी, "पर आज वो उठी थीं। सुबह नहाई भी थीं।"

उन्होंने मेरा हाथ पकड़ा और बोले, "चलो देखते हैं उन्हें क्या खाना है।"

हम उनके कमरे में गए। पर वो दवा लेकर गहरी नींद में सो चुकी थीं। अच्चन उन्हें देखते वहीं खड़े रहे। फिर धीमी आवाज़ में बोले, "बेचारी। काश कि मैं..."

और वे चुप हो गए। मैं सोचने लगी कि वो क्या चाहते थे। मैं जानती थी कि मैं क्या चाहती हूँ। मैं चाहती थी कि मैं सजीचेची को वापस ले आऊँ। तब सब कुछ पहले जैसा हो जाएगा। अच्चन और अम्मा काम पर जाएँगे और वापस आकर हमारे साथ हँसेंगे, खेलेंगे। अम्मा मेरी लिखाई सुधारने में मेरी मदद करेंगी। मैं डेज़ी के नए कारनामों पर अच्चन से बात कर सकूँगी। और तब गर्मियों की छुट्टियों का पहला दिन यूँ ही बैठे-ठाले उधेड़बुन में बीतने की बजाय उत्साह में बीतता। सजीचेची और मैं तय करने में लगे होते कि कब, क्या-क्या करना है और कहाँ करना है।

ये सारे खयाल इस तेज़ी-से आए कि मेरी रुलाई फूट गई। मैं खुद को रोक न सकी। अच्चन ने मुझे गोद में उठाया और थपथपाते हुए कुर्सी पर बैठ गए। "मेरी

बच्ची," कहते हुए वे देर तक मुझे झुलाते रहे। रोना बन्द हुआ तो लगा जैसे मैं वाकई छोटी बच्ची बन गई हूँ। थोड़ी शर्म भी आई कि बेकार ही अच्चन का मूड खराब किया। कभी-कभी तो वो शाम को जल्दी घर आते हैं।

थोड़ी देर बाद अच्चन ने मुझे बिस्तर पर सुला दिया। मैं नींद की चादर ओढ़ ही रही थी कि सिगरेट के धुएँ की गन्ध आई। शायद वो चाम्बिक्या के पेड़ के नीचे बैठे होंगे, अकेले, सिगरेट पीते और रोते।

जारी...

मेरी माँ की रसोई

पार्थ मित्तल, सातवीं, मैक्सफोर्ट स्कूल, रोहिणी, दिल्ली

मेरी माँ की रसोई बन्द
क्योंकि सब खाते खाना डिब्बाबन्द

मेरी माँ बड़ी खुश
हमने किया दुकानदार को पुश
दुकानदार ने दिया खाना
उसमें से निकला कीड़ा पुराना

मेरी माँ को आया मज़ा
दुकानदार को मिली सज़ा
मेरी माँ की रसोई आई वापिस
डिब्बे को हमने कहा खुदा हाफिज़

खुली फिर एक नई दुकान
दुकानदार की आई पुकार
पर हमने खाना न खाया
दुकानदार को घर से भगाया

कुछ दिन बाद फिर मन ललचाया
दुकानदार को फोन लगाया
दुकानदार ने दी जो दाल
लग रही थी बड़ी कमाल

पर देखा जब डिब्बा खोल
नज़र आया उसमें झोल
देखके सबका हुआ बुरा हाल
उसमें दिख रहा था एक बाल

विज्ञापन हमें ललचाते हैं
हम खिंचे चले यूँ जाते हैं
फिर दवाइयाँ
भर-भर खाते हैं

दादी-नानी की बातें मानो
माँ की रसोई से अब खालो

चित्र: शिवोम सेठ, नर्सरी, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

मेरा पन्ना

गिरे धड़ाम

अंजलि, पाँचवीं, राजकीय प्राथमिक विद्यालय, गणेशपुर, उत्तराखण्ड

एक दिन एक गाँव में एक बड़ा सुन्दर-सा पेड़ था। वह पेड़ कभी उलटा होता तो कभी सुलटा होता। उस पेड़ से सब लोग डरते थे। डर के मारे कोई भी उस पेड़ के पास नहीं आता था। उस पेड़ के नीचे एक खेल का मैदान था। वहाँ सभी बच्चे खेलते थे। और वह पेड़ उन्हें देखता था। पेड़ सोचता कि कोई भी बच्चा मुझ पर नहीं बैठता। यह सोचकर पेड़ उदास हो जाता। एक दिन उस पेड़ के नीचे कबड्डी खेलने बच्चे आए। तभी एक बच्चा उस पेड़ पर बैठता है। पेड़ खुश हो जाता है। बच्चे को भी मज़ा आता है। तभी पेड़ अचानक उलटा हो जाता है और बच्चा नीचे गिर जाता है। उसके दोस्त भी चिल्लाने लगते हैं। तब से सभी बच्चे वहाँ जाना बन्द कर देते हैं। फिर पेड़ उदास होकर सोचने लगता है कि अब से मैं उलटा-पुलटा नहीं होऊँगा। और तब से पेड़ उलटा-पुलटा नहीं होता था। अब उस पेड़ के पास सभी बच्चे आते हैं और मज़े करते हैं।

चित्र: रिया सोनी, उदयपुर, राजस्थान

मेरा पन्ना

मेहमान नवाज़ी

शिशिर श्रीवास्तव, छठवीं ब, सेंट फ्रांसिस स्कूल, गोमती नगर, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

हर दिन की तरह एक दिन मैं खेलने के लिए अपने दोस्त के घर गया। उसने मुझे बड़े प्यार से अन्दर चलकर सोफे पर बैठने के लिए कहा। मैं सोचने लगा कि आज मेरा दोस्त इतना अच्छा व्यवहार कैसे करने लगा। खैर, मैं अन्दर जाकर सोफे पर बैठ गया। अचानक पर्रर्र... की आवाज़ से मैं चौंका। मन में सोचने लगा कि आज तो मैंने छोले भी नहीं खाए, फिर यह आवाज़....! तभी मेरा दोस्त और उसकी छोटी बहन हँसते हुए कमरे में आए। मेरे दोस्त ने कहा कि यह मेरी बहन की शरारत है। उसने सोफे पर 'फार्ट-पाउच' रख दिया था।

चित्र: अकुल भण्डारी, सातवीं, दिल्ली पुलिस पब्लिक स्कूल, वज़ीराबाद, दिल्ली

चित्र: दीपिका, नौवीं, उमंग पाठशाला, गन्नौर, सोनीपत, हरियाणा

माथा पच्ची

1.

क्या तुम इस चित्र में 5 सिरों वाला बिलकुल ऐसा ही एक सितारा और बना सकते हो जो इन सभी सितारों से बड़ा हो और जो इनमें से किसी को भी छूता नहीं हो?

2.

नैंसी एक तस्वीर को देखकर बोली, "यह तस्वीर मेरे पापा की बेटी की है। पर मेरी कोई बहन नहीं है।" नैंसी झूठ नहीं बोल रही थी। पर यह कैसे हो सकता है?

3.

एक किसान आलुओं से भरा एक बोरा लेकर चल रहा है। उसका बेटा भी उसी नाप के 5 बोरे लेकर चल रहा है। किसान अपने बेटे से 50 किलो ज़्यादा वज़न लेकर चल रहा है। यह कैसे हो सकता है?

4.

सभी खाली जगहों में एक ही शब्द आएगा। बता सकते हो कौन-सा?

..... को ..... बहुत पसन्द था। उसने अपने घर में ..... लगाया। शाम की एक ..... में जब वो ..... बजा रही थी तो ऐसा लग रहा था जैसे पूरा आँगन ..... से महक रहा हो।

5.

सिकन्दर को कहा गया है कि यदि वह केवल 10 सीढ़ियाँ चढ़कर खज़ाने तक पहुँच जाए तो खज़ाना उसका हो जाएगा। नहीं तो, उसे मार दिया जाएगा। वो कुछ मुश्किल में पड़ गया है। क्या तुम उसकी कुछ मदद कर सकते हो?

6.

यदि 2+1 = 23, 3+1 = 34, 4+2 = 26, 6+3 = 29 हो, तो 7+1 =?

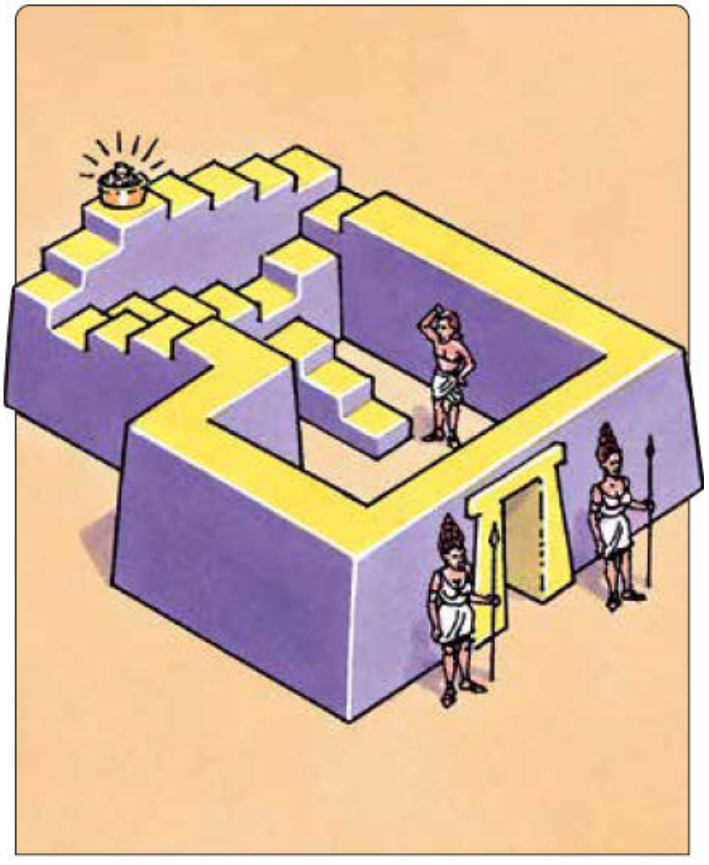

7.

चार प्याले उलटे करके रखे हुए हैं। सभी प्यालों के नीचे बराबर संख्या में टॉफियाँ रखी हैं। सभी के ऊपर चिप्पी भी लगी है। 5 या 6, 7 या 8, 6 या 7 और 7 या 5। लेकिन इनमें से केवल एक चिप्पी सही है। क्या तुम बता सकते हो हर प्याले के नीचे कितनी टॉफियाँ रखी गई हैं?

फटाफट बताओ

अगर निया की मुर्गी ने जिया के घर अण्डा दिया तो अण्डा किसका हुआ?

(ाफ ार्णि डि एक ीफ्ह फि ाइणह)

ऐसा कौन-सा शब्द है जिसे लिखते हैं पर पढ़ते नहीं हैं?

(डिफ)

क्या है जो हमेशा आने वाला होता है पर आता नहीं है?

(लक)

जादू के डण्डे को देखो, पिए नहीं कुछ खाए
नाक दबा दो, तुरन्त रोशनी चारों और फैलाए

(च्रॉट)

हाथ आए तो सौ-सौ काटे, जब थके तो पत्थर चाटे

(क्राङ)

8. तस्वीर के इन टुकड़ों को सही क्रम में जमाओ।

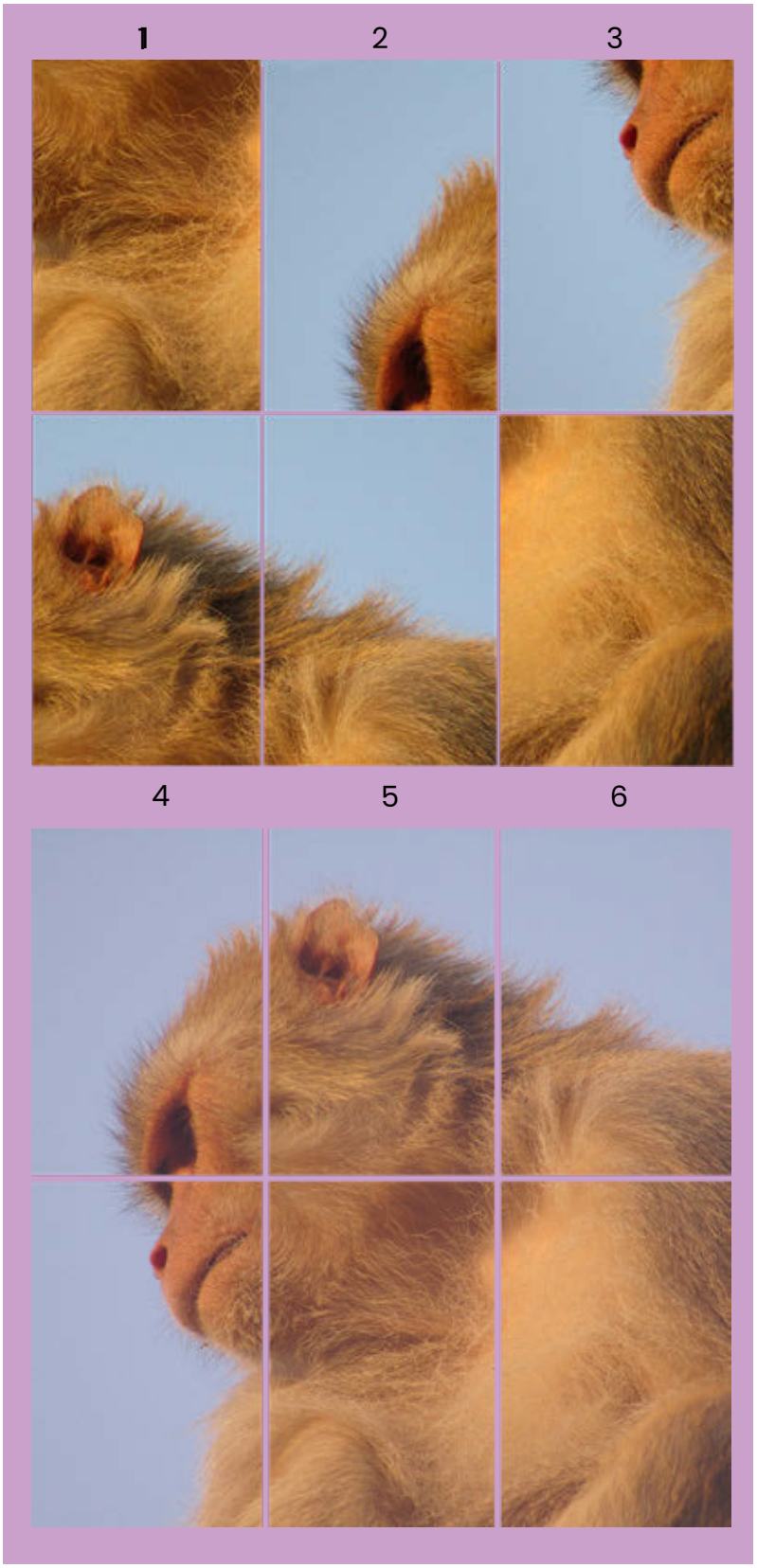

फोटो: सी एन सुब्रह्मण्यम्

चित्रपहेली

सुडोकू-31

8	4	5		6	2		7	1
1		2		7		9		
7	6		5			2	8	4
5	9	8			6			3
6		3	1		7	4	5	
4				5				
3			7		4			
9		4					3	
			3					6

दिए हुए बॉक्स में 1 से 9 तक के अंक भरने हैं। आसान लग रहा है न? पर ये अंक ऐसे ही नहीं भरने हैं। अंक भरते समय तुम्हें यह ध्यान रखना है कि 1 से 9 तक के अंक एक ही पंक्ति और स्तम्भ में दोहराए न जाएँ। साथ ही साथ, बॉक्स में तुमको नौ डब्बे दिख रहे होंगे। ध्यान रहे कि उन डब्बों में भी 1 से 9 तक के अंक दुबारा न आएँ। कठिन भी नहीं है, करके तो देखो। जवाब तुमको अगले अंक में मिल जाएगा।

बाएँ से दाएँ

ऊपर से नीचे

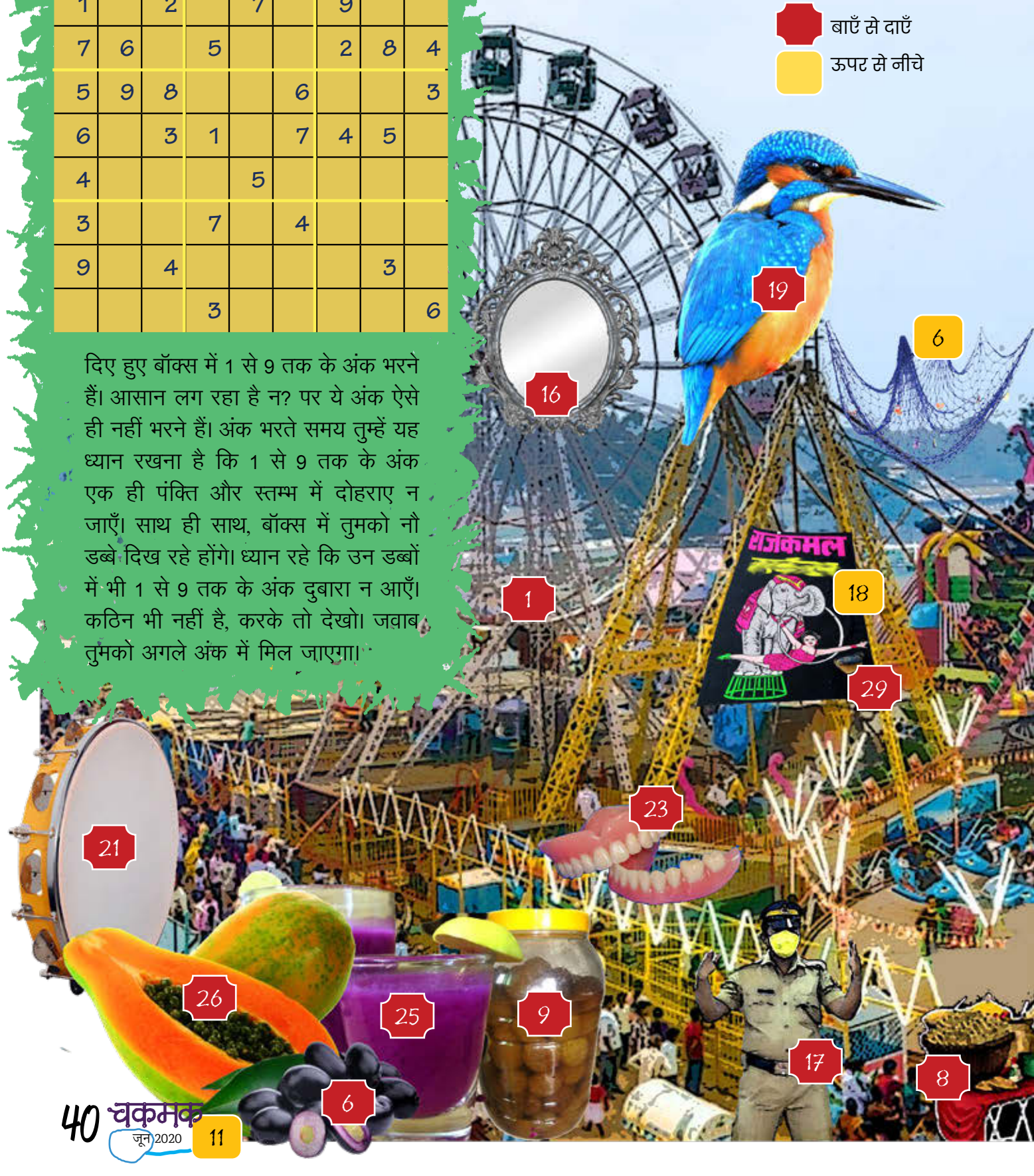

3
14
12
8
7
9
30
13
12
31
5
1
2
3
4
5
6
2
28
4
7
25
8
9
10
3
34
35
10
11
27
12
33
16
13
14
15
16
24
17
18
19
20
7
20
21
22
23
24
32
25
26
27
28
29
30
28
31
32
33
15
34
35
22
33

जवाब

1.

2. हो सकता है क्योंकि नैंसी अपनी ही तस्वीर देख रही थी।

3. क्योंकि उसका बेटा खाली बोरे लेकर चल रहा था।

4. बेला।

5.

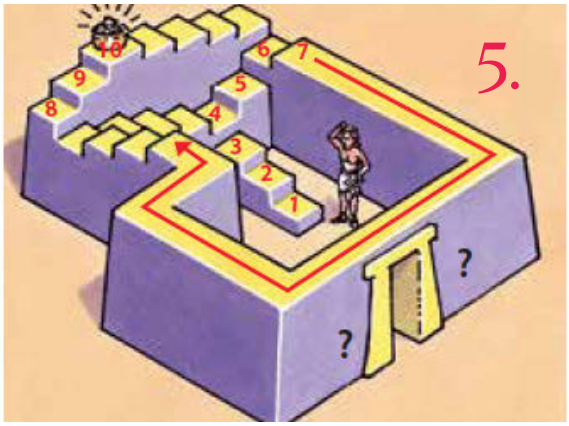

6. यदि पहली संख्या को A, दूसरी को B और तीसरी को CD मानें तो तुम पाओगे कि इन सभी संख्याओं में A/B = C और A+B = D का पैटर्न है। जैसे कि 2/1 = 2 और 2+1= 3 तो संख्या हुई 23, 3/1 = 3 और 3+1 = 4 तो संख्या हुई 34। इसी तरह 7/1 = 7 और 7+1 = 8 यानी कि 78।

7. यह दिया है कि केवल एक ही चिप्पी सही है। इसलिए टॉफियों की सही संख्या वही होगी जो केवल एक ही चिप्पी में लिखी होगी। यानी कि वो संख्या दो चिप्पियों में नहीं लिखी हो सकती। क्योंकि अगर ऐसा हुआ तो दोनों चिप्पियाँ सही हो जाएँगी। इस हिसाब से सही संख्या केवल 8 ही हो सकती है। यानी कि हर प्याले के नीचे 8 टॉफियाँ होंगी।

8.

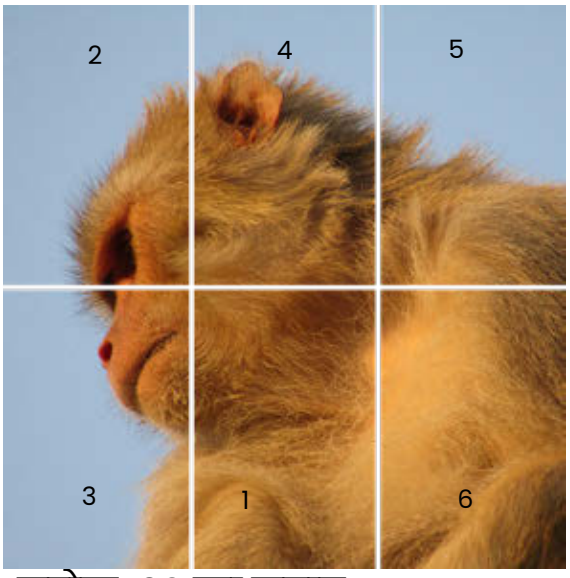

मई की चित्रपहेली का जवाब

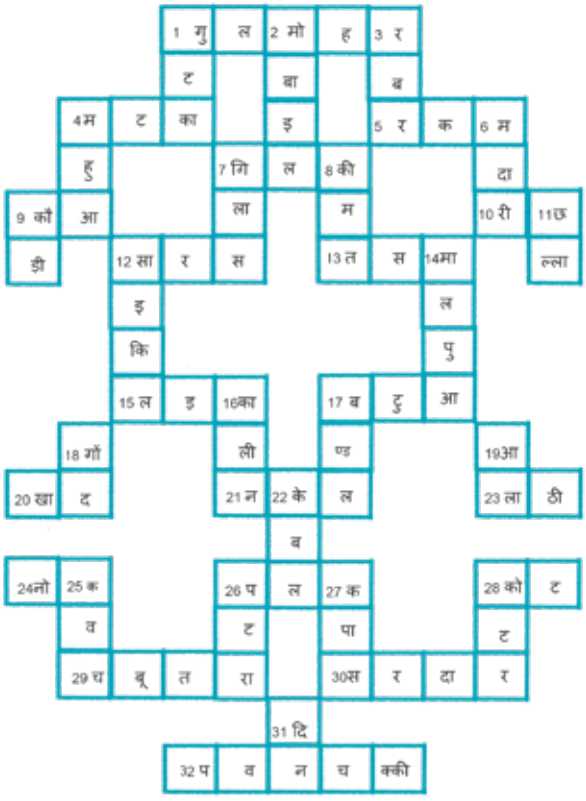

सुडोकू-30 का जवाब

5	4	3	6	9	2	1	8	7
9	2	1	7	8	4	3	5	6
8	7	6	5	3	1	2	9	4
4	9	2	1	7	8	6	3	5
6	5	8	9	2	3	7	4	1
1	3	7	4	5	6	8	2	9
7	8	9	2	1	5	4	6	3
3	6	5	8	4	7	9	1	2
2	1	4	3	6	9	5	7	8

भारतीय वन्यजीव वीडियो कॉन्फरेंस

रोहन चक्रवर्ती

RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2018-20

मेराज रज़ा
चित्र: प्रशान्त सोनी

बुढ़िया के बाल

खा लो, खा लो, जी भर खा लो,
मिठाई बेमिसाल।
घूम-घूम घिरनी से निकली,
मुँह में जाते ही मैं पिघली,
देखो, तो स्पंज लगूँ मैं,
रंग गुलाबी-लाल।
गली-महल्ले में जब जाऊँ,
सब बच्चों को मैं ललचाऊँ,
हल्की हूँ मैं रूई सरीखी,
रेशा-रेशा जाल।
मज़ेदार हूँ मैं खाने में,
चीनी मेरे हर दाने में,
हवा-मिठाई कह लो मुझको,
या बुढ़िया के बाल।

प्रकाशक एवं मुद्रक अरविन्द सरदाना द्वारा स्वामी रैक्स डी रोज़ारियो के लिए एकलव्य, ई-10, शंकर नगर, 61/2 बस स्टॉप के पास, भोपाल 462016, म.प्र. से प्रकाशित एवं आर के सिक्युप्रिन्ट प्रा लि प्लॉट नम्बर 15-बी, गोविन्दपुरा इण्डस्ट्रियल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल - 462021 (फोन: 0755 - 2687589) से मुद्रित।
सम्पादक: विनता विश्वनाथन